रुचिरा

द्वितीयो भागः

सप्तमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्



रुचिरा

द्वितीयो भागः

सप्तमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्


0755



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

दिसंबर 2006 पौष 1928

संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

मार्च 2010 चैत्र 1932

पुनर्मुद्रण

फरवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937
जनवरी 2018 माघ 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941

PD 530T RPS

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा हपलूस प्रिंटिंग हाउस, ए-23, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेस-II, नयी दिल्ली -110 064 द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-645-4

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलूर 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
सहायक संपादक : *ओमप्रकाश*
उत्पादन सहायक : *ओमप्रकाश*

आवरण
कल्लोल मजूमदार

सज्जा
अरविन्दर चावला

चित्रांकन
कल्लोल मजूमदार

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या (2018 तमे वर्षे) पुनरीक्षिते चास्मिन् संस्करणे अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य

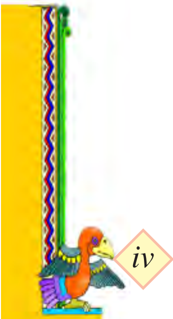


विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नवदेहली
20 नवम्बर 2006

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्



पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अर्कनाथ चौधरी, *प्रोफ़ेसर,* राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर कैंपस, जयपुर।

कमलाकान्त मिश्र, *पूर्व प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रवाचक* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

दु:शासन ओझा, *प्राचार्य,* केंद्रीय विद्यालय, पुरी, ओड़ीशा।

देवकी सेनगुप्ता, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत कुंज, नयी दिल्ली।

नारायण दाश, *शिक्षक* (संस्कृत), सर्वकारीय उच्च विद्यालय, गुम्मा, गजपति, ओड़ीशा।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* (संस्कृत), रा. व. मा. बा. विद्यालय, नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

वासुदेव शास्त्री, *संस्कृत प्रभारी* (सेवानिवृत्त), एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तरांचल।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।



आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय–विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् डॉ. रामास्वामी आयंगर, *निदेशक* (अवकाश प्राप्त), चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन, बेंगलूरु एवं डॉ. विभा रानी दूबे, *रीडर* (संस्कृत), महिला महाविद्यालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी की आभारी है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासंभव योगदान दिया है। प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, *कुलपति,* श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली; प्रो. रमेश भारद्वाज, *संस्कृत विभाग,* दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रो. रंजना अरोड़ा, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; प्रो. जतीन्द्र मोहन मिश्र, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; प्रो. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.; डॉ. आभा झा, *पी.जी.टी.,* (संस्कृत), गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली तथा श्रीमती लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, *टी.जी.टी.,* (संस्कृत), केंद्रिय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली ने पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है। परिषद् सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

परिषद् डॉ. सम्पदानन्द मिश्र के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य–सामग्री ली गई है।

पुस्तक निर्माण में विविध सहयोग के लिए परशुराम कौशिक, *प्रभारी,* कंप्यूटर स्टेशन, भाषा विभाग; आलोक कुमार शर्मा, *शोध सहायक*, कुमारी प्रीति झा, जे.पी.एफ., (संस्कृत) तथा *डी.टी.पी. ऑपरेटर* नरेन्द्र कुमार वर्मा, कमलेश आर्या, राजीव एवं श्रीमती रेखा शर्मा धन्यवाद के पात्र हैं।



पाठ्यपुस्तक पुनरीक्षण समिति

राधावल्लभ त्रिपाठी, *कुलपति*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जनकपुरी, नयी दिल्ली।

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

उमा शंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार।

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

पंकज कुमार मिश्र, *प्रवक्ता* (संस्कृत), सेंट स्टीफ़ेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता*, एम. वी. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, दिल्ली।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* (संस्कृत), रा. व. मा. बा. विद्यालय, नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड।

रणजित बेहेरा (समन्वयक), *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।



गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

भूमिका

संस्कृत भाषा प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, इतिहास, कला, विज्ञान आदि विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। संस्कृत के व्याकरण एवं वाक्य संरचना का प्रभाव भी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर परिलक्षित होता है। सम्प्रेषणात्मक उपागम के आधार पर संस्कृत के शिक्षण को विद्यालय स्तर पर सुगम, रुचिकर एवं सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्वीकृत पाठ्यक्रम के क्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत भाषा-विभाग द्वारा उच्चप्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकसित होने वाली नवीन पुस्तक शृङ्खला **रुचिरा** का विकास किया गया है। इनमें वैविध्यपूर्ण ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है।

रुचिरा पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार रुचिवर्धक सामग्री से विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में संस्कृत भाषा के प्रयोग में कुशलता तो प्रदान करेगी ही, साथ ही संस्कृत साहित्य के प्रति उत्सुकता एवं सम्मान भी पैदा करेगी।

इसी शृङ्खला का द्वितीय पुष्प **रुचिरा द्वितीयो भागः** (पुनरीक्षित संस्करण 2018) छात्र-छात्राओं के लिए प्रस्तुत है। इस पुस्तक के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों की अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर माध्यम से संस्कृत में ही हो जिससे विद्यार्थी संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की कुशलता विकसित कर सकें।

संस्कृत भाषा की छन्दःसम्पदा की लय एवं गेयता का आनन्द छात्रों को प्राप्त हो, एतदर्थ कुछ नवीन गीत भी इस पुस्तक में दिये गए हैं। पाठ्य-सामग्री को रोचक बनाने के लिए कुछ पाठों की रचना संवाद अथवा नाट्य-शैली में की गई है। वर्णनात्मक-पाठों *में 'पण्डिता रमाबाई', 'विश्वबन्धुत्वम्' और 'अमृतं संस्कृतम्'* 'अनारिकायाः जिज्ञासा' एवं कथा पाठों *में 'दुर्बुद्धिः विनश्यति'(पञ्चतन्त्र की संपादित कथा), 'स्वावलम्बनम्', 'समवायो हि दुर्जयः'* आदि में प्रेरणास्पद विषयवस्तु को प्रस्तुत किया गया है। संवादात्मक पाठों में छात्रों को आनन्द की अनुभूति हो सके, इसके लिए *'हास्यबालकविसम्मेलनम्'* जैसे पाठों को भी स्थान दिया गया है। राष्ट्रध्वज के महत्त्व को बताने के लिए संवादात्मक शैली में *'त्रिवर्णः ध्वजः'* पाठ को इस पुस्तक में समाहित किया गया है।

पद्य-पाठों के अन्तर्गत *'सुभाषितानि', 'सदाचारः', 'विद्याधनम्'* तथा नवीन विधा लोरी के रूप में *'लालनगीतम्'* आदि पाठों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक में नाटक के रूप में *'सङ्कल्पः सिद्धिदायकः'* पाठ का समावेश किया गया है। इस प्रकार इस पुस्तक में कुल 15 पाठ हैं। कठिन शब्दों का अर्थ-बोध कराने के लिए छात्रों की सुविधा हेतु



प्रत्येक पाठ के अन्त में दिये गए शब्दार्थ (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी) पुस्तक की विशेषता है। पाठान्त में विविध प्रश्नों वाली अभ्यास-चारिका दी गई है जिससे भाषा-संरचनात्मक-ज्ञान की वृद्धि में विद्यार्थियों को सहायता मिल सके। इसके अतिरिक्त कतिपय पाठों के साथ '*ध्यातव्यम्*' शीर्षक के अंतर्गत सरल संस्कृत पढ़ने-लिखने-समझने तथा कहीं पर हिन्दी माध्यम से कुछ अतिरिक्त एवं उपयोगी जानकारी दी गयी है। आकर्षक चित्रों के आधार पर स्वकल्पना द्वारा सरल वाक्यों का निर्माण भी कर सकेंगे। पुस्तक के तदनुसार अन्त में '*परिशिष्टम्*' के अन्तर्गत कारक और विभक्तियों का परिचय दिया गया है जिससे विद्यार्थी इनके अन्तर को समझ सकें। साथ ही पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दों एवं धातुओं में से कुछ प्रमुख शब्दों तथा धातुओं के रूप भी दिये गए हैं-

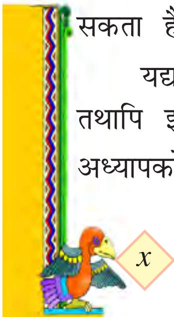
संक्षेप में **रुचिरा द्वितीयो भागः** में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया गया है-

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- प्रदत्त निर्देशों के आधार पर प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न-निर्माण का कौशल
- भाषिक तत्त्वों (श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन) का कौशल
- जीवनमूल्यों से युक्त संस्कृत-पाठों का परिचय
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप कर सकने की क्षमता
- संस्कृत की वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- रोचक कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम का संयोजन कर सकने का सामर्थ्य
- अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित ज्ञानवर्धक अभ्यास
- प्रत्येक पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ

शिक्षक की भूमिका

कोई भी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक कितनी ही वैज्ञानिक और सुरुचिपूर्ण क्यों न हो, अध्यापन-कार्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ अध्यापन की सफलता के लिए तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है, वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम् बनाने के लिए यथावसर दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं, उनका विद्यार्थियों से अभिनय भी कराया जा सकता है।

यद्यपि इस संकलन को विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, तथापि इसको और अधिक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।



पाठानुक्रमणिका



मङ्गलम्

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः

एवा मे प्राण मा बिभेः।।1।।

यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः

एवा मे प्राण मा बिभेः।।2।।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः

एवा मे प्राण मा बिभेः।।3।।

यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यतः

एवा मे प्राण मा बिभेः।।4।।

भावार्थ

जैसे आकाश और पृथ्वी दोनों न डरते हैं और न दुःख देते हैं,

वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ।।1।।

जैसे दिन और रात न दुःख देते हैं और न डरते हैं,

वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ।।2।।

जैसे सूर्य और चन्द्र न दुःख देते हैं और न डरते हैं,

वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ।।3।।

जैसे सत्य और असत्य न दुःख देते हैं और न डरते हैं,

वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ।।4।।

प्रथमः पाठः

सुभाषितानि





पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ 1 ॥

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥ 2 ॥

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये ।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥ 3 ॥

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम् ।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥ 4 ॥

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥ 5 ॥

क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते ।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः ॥ 6 ॥

शब्दार्थाः

पृथिव्याम्	– धरती पर	on the earth
सुभाषितम्	– सुन्दर वचन	good sayings
मूढैः	– मूर्खों के द्वारा	by fools
पाषाणखण्डेषु	– पत्थर के टुकड़ों में	in stone pieces
रत्नसंज्ञा	– रत्न का नाम	name of precious stone
विधीयते	– किया/समझा जाता है	to be done/given
धार्यते	– धारण किया जाता है	bears
तपते	– जलता है	burns/heats
वाति	– बहता है / बहती है	blows
वायुश्च (वायुः+च)	– पवन भी	air
प्रतिष्ठितम्	– स्थित है	situated
तपसि	– तपस्या में	in penance
शौर्ये	– बल में	in bravery
नये	– नीति में	in policy
विस्मयः	– आश्चर्य	wonder
बहुरत्ना	– अनेक रत्नों वाली	possessing many jewells
वसुन्धरा	– पृथिवी	earth
सद्भिरेव (सद्भिः+एव)	– सज्जनों के साथ ही	with gentlemen alone
सहासीत (सह +आसीत)	– साथ बैठना चाहिए	should sit together
कुर्वीत	– करना चाहिए	should do
सद्भिर्विवादम् (सद्भिः+विवादम्)	– सज्जनों के साथ झगड़ा	quarrel with gentlemen

क्षमावशीकृतिर्लोके (क्षमावशीकृतिः+लोके)	–	संसार में क्षमा (सबसे बड़ा) वशीकरण है	forgiveness is an enchantment in the world
नासद्भिः (न+असद्भिः)	–	असज्जन लोगों के साथ नहीं	not with ungentlemanly people
धनधान्यप्रयोगेषु	–	धनधान्य के प्रयोग में	in the use of wealth
संग्रहेषु	–	संग्रहों में, संचय करने में	in accumulation
त्यक्तलज्जः	–	संकोच या भीरुता को छोड़नेवाला	one who has given up shyness
शान्तिखड्गः	–	शान्ति की तलवार	sword of peace





1. **सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।**

2. **यथायोग्यं श्लोकांशान् मेलयत-**

क	ख
धनधान्यप्रयोगेषु	नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यः	त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
सत्येन धार्यते पृथ्वी	बहुरत्ना वसुन्धरा।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च	विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च	सत्येन तपते रविः।



3. एकपदेन उत्तरत-

(क) पृथिव्यां कति रत्नानि?

(ख) मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते?

(ग) पृथिवी केन धार्यते?

(घ) कैः सङ्गतिं कुर्वीत?

(ङ) लोके वशीकृतिः का?

4. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) सत्येन वाति वायुः।

(ख) सद्भिः एव सहासीत।

(ग) वसुन्धरा बहुरत्ना भवति।

(घ) विद्यायाः संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

(ङ) सद्भिः मैत्रीं कुर्वीत।

5. प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) कुत्र विस्मयः न कर्त्तव्यः?

(ख) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि कानि?

(ग) त्यक्तलज्जः कुत्र सुखी भवेत्?



6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा लिङ्गानुसारं लिखत-

रत्नानि	वसुन्धरा	सत्येन	सुखी	अन्नम्	वह्निः	रविः	पृथ्वी	सङ्गतिम्

पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
....	....	....
....	....	....
....	....	....

7. अधोलिखितपदेषु धातवः के सन्ति?

पदम्	धातुः
करोति	....
पश्य	....
भवेत्	....
तिष्ठति	....





0755CH02

द्वितीयः पाठः

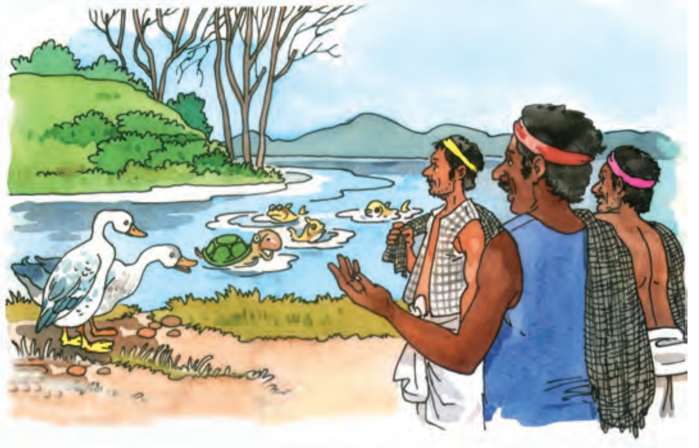
दुर्बुद्धिः विनश्यति



अस्ति मगधदेशे फुल्लोत्पलनाम सरः। तत्र संकटविकटौ हंसौ निवसतः। कम्बुग्रीवनामकः तयोः मित्रम् एकः कूर्मः अपि तत्रैव प्रतिवसति स्म।

अथ एकदा धीवराः तत्र आगच्छन्। ते अकथयन् –"वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः।" एतत् श्रुत्वा कूर्मः अवदत्–''मित्रे! किं युवाभ्यां धीवराणां वार्ता श्रुता? अधुना किम् अहं करोमि?'' हंसौ अवदताम् – ''प्रातः यद् उचितं तत्कर्त्तव्यम्।'' कूर्मः अवदत्– ''मैवम्। तद् यथाऽहम् अन्यं ह्रदं गच्छामि तथा कुरुतम्।'' हंसौ अवदताम्–''आवां किं करवाव?''कूर्मः अवदत्–''अहं युवाभ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि।''

हंसौ अवदताम्–''अत्र कः उपायः?'' कच्छपः वदति–''युवां काष्ठदण्डम् एकं चञ्च्वा धारयताम्। अहं काष्ठदण्डमध्ये अवलम्ब्य युवयोः पक्षबलेन सुखेन गमिष्यामि।'' हंसौ अकथयताम्– ''सम्भवति एषः उपायः। किन्तु अत्र एकः अपायोऽपि वर्तते। आवाभ्यां नीयमानं त्वामवलोक्य जनाः किञ्चिद् वदिष्यन्ति एव। यदि त्वमुत्तरं दास्यसि तदा तव मरणं निश्चितम्। अतः त्वम् अत्रैव वस।'' तत् श्रुत्वा क्रुद्धः कूर्मः अवदत्– ''किमहं मूर्खः? उत्तरं न दास्यामि। किञ्चिदपि न वदिष्यामि।'' अतः अहं यथा वदामि तथा युवां कुरुतम्।





एवं काष्ठदण्डे लम्बमानं कूर्मं पौराः अपश्यन्। पश्चाद् अधावन् अवदन् च– "हंहो! महदाश्चर्यम्। हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।" कश्चिद् वदति– "यद्ययं कूर्मः कथमपि निपतति तदा अत्रैव पक्त्वा खादिष्यामि।" अपरः अवदत्– "सरस्तीरे दग्ध्वा खादिष्यामि"। अन्यः अकथयत्– "गृहं नीत्वा भक्षयिष्यामि" इति। तेषां तद् वचनं श्रुत्वा कूर्मः क्रुद्धः जातः। मित्राभ्यां दत्तं वचनं विस्मृत्य सः अवदत्–"यूयं भस्म खादत।" तत्क्षणमेव कूर्मः दण्डात् भूमौ पतितः। पौरैः सः मारितः। अत एवोक्तम्–

सुहृदां हितकामानां वाक्यं यो नाभिनन्दति।
स कूर्म इव दुर्बुद्धिः काष्ठाद् भ्रष्टो विनश्यति।।

शब्दार्थाः

सरः	–	तालाब	pond
कूर्मः/कच्छपः	–	कछुआ	turtle
प्रतिवसति स्म	–	रहता था	was living
धीवराः	–	मछुआरे	fishermen
मत्स्यकूर्मादीन्	–	मछली, कछुआ आदि को	fishes, turtles etc.



मारयिष्यामः	–	मारेंगे	shall kill
मैवम् (मा+एवम्)	–	ऐसा नहीं	not so
ह्रदम्	–	तालाब को	to the pond
धारयताम्	–	धारण करें	hold
पक्षबलेन	–	पंखो के बल से	with the strength of wings
अपायः	–	हानि	harm
नीयमानम्	–	ले जाते हुए	being carried
अवलोक्य	–	देखकर	looking
लम्बमानम्	–	लटकते हुए (को)	swinging
उड्डीयते	–	उड़ रहा है	flying
विस्मृत्य	–	भूल कर	forgetting
भस्म	–	राख	ashes
सुहृदाम्	–	मित्रों का/के/की	of friends
हितकामानाम्	–	कल्याण की इच्छा रखने वाले का/के/की	of wellwishers
अभिनन्दति	–	प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता/करती है	welcomes
दुर्बुद्धिः	–	दुष्ट बुद्धि वाला	crooked







1. उच्चारणं कुरुत-

फुल्लोत्पलम्	अवलम्ब्य	पक्त्वा
कम्बुग्रीवः	आवाभ्याम्	भक्षयिष्यामि
उक्तवान्	ह्रदम्	सुहृदाम्
भवद्भ्याम्	उड्डीयते	भ्रष्टः

2. एकपदेन उत्तरत-

(क) कूर्मस्य किं नाम आसीत्?

(ख) सरस्तीरे के आगच्छन्?

(ग) कूर्मः केन मार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति?

(घ) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा के अधावन्?

3. अधोलिखितवाक्यानि कः कं प्रति कथयति इति लिखत-

	कः कथयति	कं प्रति कथयति
यथा- प्रातः यद् उचितं तत्कर्त्तव्यम्।	हंसौ	कूर्मं प्रति
(क) अहं भवद्भ्यां सह आकाशमार्गेण गन्तुम् इच्छामि।	....	....
(ख) अत्र कः उपायः?	....	....
(ग) अहम् उत्तरं न दास्यामि।	....	....
(घ) यूयं भस्म खादत।	....	....

4. मञ्जूषातः क्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत–

अभिनन्दति	भक्षयिष्यामः	इच्छामि	वदिष्यामि	उड्डीयते	प्रतिवसति स्म

(क) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि ....।

(ख) अहं किञ्चिदपि न ....।

(ग) यः हितकामानां सुहृदां वाक्यं न ....।

(घ) एकः कूर्मः अपि तत्रैव ....।

(ङ) अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् ....।

(च) वयं गृहं नीत्वा कूर्मं ....।

5. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कच्छपः कुत्र गन्तुम् इच्छति?

(ख) कच्छपः कम् उपायं वदति?

(ग) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः किम् अवदन्?

(घ) कूर्मः मित्रयोः वचनं विस्मृत्य किम् अवदत्?

6. घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत–

(क) कूर्मः हंसयोः सहायतया आकाशमार्गेण अगच्छत्।

(ख) पौराः अकथयन्–वयं पतितं कूर्मं खादिष्यामः।

(ग) कूर्मः हंसौ च एकस्मिन् सरसि निवसन्ति स्म।

(घ) केचित् धीवराः सरस्तीरे आगच्छन्।

(ङ) कूर्मः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति स्म।

(च) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः अधावन्।

(छ) कूर्मः आकाशात् पतितः पौरैः मारितश्च।

(ज) 'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः' इति धीवराः अकथयन्।

7. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

जलाशयम्	अचिन्तयत्	वृद्धः	दुःखिताः	कोटरे
वृक्षस्य	सर्पः	आदाय	समीपे	

एकस्य वृक्षस्य शाखासु अनेके काकाः वसन्ति स्म। तस्य वृक्षस्य .... एकः सर्पः अपि अवसत्। काकानाम् अनुपस्थितौ .... काकानां शिशून् खादति स्म। काकाः .... आसन्। तेषु एकः .... काकः उपायम् ....। वृक्षस्य .... जलाशयः आसीत्। तत्र एका राजकुमारी स्नातुं .... आगच्छति स्म। शिलायां स्थितं तस्याः आभरणम् .... एकः काकः वृक्षस्य उपरि अस्थापयत्। राजसेवकाः काकम् अनुसृत्य .... समीपम् अगच्छन्। तत्र ते तं सर्पं च अमारयन्। अतः एवोक्तम्–उपायेन सर्वं सिद्ध्यति।

ध्यातव्यम्



इयं कथा 'पञ्चतन्त्रम्' इति ग्रन्थात् सम्पादितं कृत्वा उद्धृता। पञ्चतन्त्रस्य लेखकः विष्णुशर्मा। पञ्चानां तन्त्राणां समाहारः पञ्चतन्त्रम् इति। अतः पञ्चतन्त्रस्य पञ्च भागाः सन्ति–मित्रभेदः, मित्रलाभः, सन्धिविग्रहः, लब्धप्रणाशः अपरीक्षित–कारकञ्च।

अस्मिन् पाठे अनवसरे भाषणेन कथं सर्वनाशः भवतीति दर्शितम्। क्वचित् मौनं कार्यसाधकं भवति। यथोक्तम्–

विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।
मूर्खो हि शोभते तावत् यावत् किञ्चिन्न भाषते।





0755CH03

तृतीयः पाठः

स्वावलम्बनम्



संख्यावाचिशब्दाः तद्-एतद्-शब्दौ च

कृष्णमूर्तिः श्रीकण्ठश्च मित्रे आस्ताम्। श्रीकण्ठस्य पिता समृद्धः आसीत्। अतः तस्य भवने सर्वविधानि सुख-साधनानि आसन्। तस्मिन् विशाले भवने चत्वारिंशत् स्तम्भाः आसन्। तस्य अष्टादश-प्रकोष्ठेषु पञ्चाशत् गवाक्षाः, चतुश्चत्वारिंशत् द्वाराणि, षट्त्रिंशत् विद्युत्-व्यजनानि च आसन्। तत्र दश सेवकाः निरन्तरं कार्यं कुर्वन्ति स्म। परं कृष्णमूर्तेः माता पिता च निर्धनौ कृषकदम्पती। तस्य गृहम् आडम्बरविहीनं साधारणञ्च आसीत्।





एकदा श्रीकण्ठः तेन सह प्रातः नववादने तस्य गृहम् अगच्छत्। तत्र कृष्णमूर्तिः तस्य माता पिता च स्वशक्त्या श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम् अकुर्वन्। एतत् दृष्ट्वा श्रीकण्ठः अकथयत्- "मित्र! अहं भवतां सत्कारेण सन्तुष्टोऽस्मि। केवलम् इदमेव मम दुःखं यत् तव गृहे एकोऽपि भृत्यः नास्ति। मम सत्काराय भवतां बहु कष्टं जातम्। मम गृहे तु बहवः कर्मकराः सन्ति।" तदा कृष्णमूर्तिः अवदत्-"मित्र! ममापि अष्टौ कर्मकराः सन्ति। ते च द्वौ पादौ, द्वौ हस्तौ, द्वे नेत्रे,

द्वे श्रोत्रे इति। एते प्रतिक्षणं मम सहायकाः। किन्तु तव भृत्याः सदैव सर्वत्र च उपस्थिताः भवितुं न शक्नुवन्ति। त्वं तु स्वकार्याय भृत्याधीनः। यदा यदा ते अनुपस्थिताः, तदा तदा त्वं कष्टम् अनुभवसि। स्वावलम्बने तु सर्वदा सुखमेव, न कदापि कष्टं भवति।''

श्रीकण्ठः अवदत्–''मित्र! तव वचनानि श्रुत्वा मम मनसि महती प्रसन्नता जाता। अधुना अहमपि स्वकार्याणि स्वयमेव कर्तुम् इच्छामि।'' भवतु, सार्धद्वादशवादनमिदम्। साम्प्रतं गृहं चलामि।

शब्दार्थाः

समृद्धः	–	धनी	rich
चत्वारिंशत्	–	चालीस	forty
अष्टादश	–	अठारह	eighteen
प्रकोष्ठेषु	–	कमरों में	in the rooms
पञ्चाशत्	–	पचास	fifty
गवाक्षाः	–	खिड़कियाँ	windows
चतुश्चत्वारिंशत्	–	चवालीस	fortyfour
षट्त्रिंशत्	–	छत्तीस	thirtysix
कृषकदम्पती	–	किसान पति-पत्नी	farmer couple
आतिथ्यम्	–	अतिथि-सत्कार	respecting guests
कर्मकरः	–	काम करने वाला	worker
भवताम्	–	आपके	yours
भृत्यः	–	नौकर/सेवक	servant
शक्नुवन्ति	–	सकते हैं	able to do

सार्धद्वादशवादनम्	-	साढ़े बारह बजे	half past twelve
साम्प्रतम्	-	अभी	now





1. **उच्चारणं कुरुत-**

विंशतिः	त्रिंशत्	चत्वारिंशत्
द्वाविंशतिः	द्वात्रिंशत्	द्विचत्वारिंशत्
चतुर्विंशतिः	त्रयस्त्रिंशत्	त्रयश्चत्वारिंशत्
पञ्चविंशतिः	चतुस्त्रिंशत्	चतुश्चत्वारिंशत्
अष्टाविंशतिः	अष्टात्रिंशत्	सप्तचत्वारिंशत्
नवविंशतिः	नवत्रिंशत्	पञ्चाशत्

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-**

(क) कस्य भवने सर्वविधानि सुखसाधनानि आसन्?

(ख) कस्य गृहे कोऽपि भृत्यः नास्ति?

(ग) श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम् के अकुर्वन्?

(घ) सर्वदा कुत्र सुखम्?

(ङ) श्रीकण्ठः कृष्णमूर्तेः गृहं कदा अगच्छत्?

(च) कृष्णमूर्तेः कति कर्मकराः सन्ति?



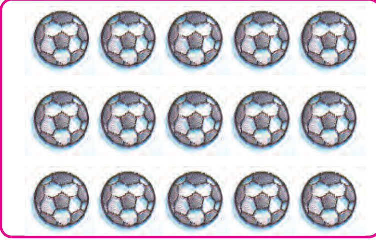
3. चित्राणि गणयित्वा तदधः संख्यावाचकशब्दं लिखत-



....



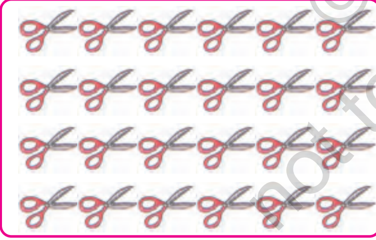
....



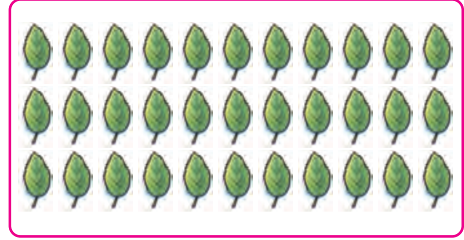
....



....



....



....

4. मञ्जूषातः अङ्कानां कृते पदानि चिनुत-

चत्वारिंशत् सप्तविंशतिः एकत्रिंशत् पञ्चाशत् अष्टाविंशतिः त्रिंशत् चतुर्विंशतिः

28 .... 27 ....

30 .... 31 ....

24 .... 40 ....

50 ....

5. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



कृषकाः	कृषकौ	एते	धान्यम्	एषः	कृषकः
एतौ	क्षेत्रम्	कर्षति	कुरुतः	खननकार्यम्	रोपयन्ति

....

....

....

6. अधोलिखितान् समयवाचकान् अङ्कान् पदेषु लिखत-

यथा- 10.30 सार्धद्वादशवादनम्   5.00 ....

7.00	3.30 ....
2.30	9.00 ....
11.00	12.30 ....
4.30	8.00 ....
1.30	7.30 ....

7. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

षड्	त्रिंशत्	एकत्रिंशत्	द्वौ	द्वादश	अष्टाविंशतिः

(क) .... ऋतवः भवन्ति।

(ख) मासाः .... भवन्ति।

(ग) एकस्मिन् मासे .... अथवा .... दिवसाः भवन्ति।

(घ) फरवरी-मासे सामान्यतः .... दिनानि भवन्ति।

(ङ) मम शरीरे .... हस्तौ स्तः।

ध्यातव्यम्



भारतीयवर्षानुसारं मासानां ऋतूनां च नामानि-

मासाः	ऋतुः	मासाः	ऋतुः
1. चैत्रः 2. वैशाखः	1. वसन्तः	7. आश्विनः 8. कार्तिकः	4. शरद्
3. ज्येष्ठः 4. आषाढः	2. ग्रीष्मः	9. मार्गशीर्षः 10. पौषः	5. हेमन्तः
5. श्रावणः 6. भाद्रपदः	3. वर्षा	11. माघः 12. फाल्गुनः	6. शिशिरः





GHSK104

चतुर्थः पाठः

हास्यबालकविसम्मेलनम्



(विविध-वेशभूषाधारिणः चत्वारः बालकवयः मञ्चस्य उपरि उपविष्टाः सन्ति। अधः श्रोतारः हास्यकविताश्रवणाय उत्सुकाः सन्ति कोलाहलं च कुर्वन्ति)



सञ्चालकः – अलं कोलाहलेन। अद्य परं हर्षस्य अवसरः यत् अस्मिन् कविसम्मेलने काव्यहन्तारः कालयापकाश्च भारतस्य हास्यकविधुरन्धराः समागताः सन्ति। एहि, करतलध्वनिना वयम् एतेषां स्वागतं कुर्मः।

गजाधरः – सर्वेभ्योऽरसिकेभ्यो नमो नमः। प्रथमं तावद् अहम् आधुनिकं वैद्यम्

उद्दिश्य स्वकीयं काव्यं श्रावयामि–

वैद्यराज! नमस्तुभ्यं यमराजसहोदर ।
यमस्तु हरति प्राणान् वैद्यः प्राणान् धनानि च ॥

(सर्वे उच्चैः हसन्ति)

कालान्तकः – अरे! वैद्यास्तु सर्वत्र परन्तु न ते मादृशाः कुशलाः जनसंख्यानिवारणे। ममापि काव्यम् इदं शृण्वन्तु भवन्तः–

चितां प्रज्वलितां दृष्ट्वा वैद्यो विस्मयमागतः ।
नाहं गतो न मे भ्राता कस्येदं हस्तलाघवम् ॥

(सर्वे पुनः हसन्ति)

तुन्दिलः – (तुन्दस्य उपरि हस्तम् आवर्तयन्) तुन्दिलोऽहं भोः। ममापि इदं काव्यं श्रूयताम्, जीवने धार्यतां च–

परान्नं प्राप्य दुर्बुद्धे! मा शरीरे दयां कुरु ।
परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि पुनः पुनः ॥

(सर्वे पुनः अट्टहासं कुर्वन्ति)

चार्वाकः – आम्, आम्। शरीरस्य पोषणं सर्वथा उचितमेव। यदि धनं नास्ति, तदा ऋणं कृत्वापि पौष्टिकः पदार्थः एव भोक्तव्यः। तथा कथयति चार्वाककविः–

यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।

श्रोतारः – तर्हि ऋणस्य प्रत्यर्पणं कथम्?

चार्वाकः – श्रूयतां मम अवशिष्टं काव्यम्–

घृतं पीत्वा श्रमं कृत्वा ऋणं प्रत्यर्पयेत् जनः ॥

(काव्यपाठश्रवणेन उत्प्रेरितः एकः बालकोऽपि आशुकवितां रचयति, हासपूर्वकं च श्रावयति)



बालकः – श्रूयताम्, श्रूयतां भोः! ममापि काव्यम्–

गजाधरं कविं चैव तुन्दिलं भोज्यलोलुपम्।
कालान्तकं तथा वैद्यं चार्वाकं च नमाम्यहम् ॥

(काव्यं श्रावयित्वा 'हा हा हा' इति कृत्वा हसति। अन्ये चाऽपि हसन्ति। सर्वे गृहं गच्छन्ति।)

शब्दार्थाः

अधः	–	नीचे	downwards
कोलाहलम्	–	शोर	noise
काव्यहन्तारः	–	काव्य को नष्ट करने वाले	destroyers of poetry
कालयापकाः	–	समय बर्बाद करने वाले	whiling away the time
धुरन्धराः	–	अग्रणी, श्रेष्ठ	the best
एहि	–	आयें, आइए	please come
करतलध्वनिना	–	तालियों से	with clapping sounds
अरसिकेभ्यः	–	नीरस जनों को	to the disinterested (persons)
स्वकीयम्	–	अपने	own
मादृशाः	–	मेरे जैसे	like me
हस्तलाघवम्	–	हाथ की सफाई	hand's work
तुन्दस्य	–	तोंद के	enlarged belly
आवर्तयन्	–	फेरता हुआ	putting hands all over

धार्यताम्	–	धारण करें	please bear
परान्नम्	–	दूसरों के अन्न को	other's food
(परा+अन्नम्)			
पौष्टिकः	–	पुष्टि देने वाला	nourishing
प्रत्यर्पणम्	–	लौटाना	repaying
(प्रति+अर्पणम्)			
अवशिष्टम्	–	बचा हुआ, शेष	remaining
उत्प्रेरितः	–	प्रेरित होकर	being inspired
श्रावयति	–	सुनाता है	recites
भोज्यलोलुपम्	–	खाने का लोभी	greedy for food





1. **उच्चारणं कुरुत–**

उपरि	अधः	उच्चैः
नीचैः	बहिः	अलम्
कदापि	अन्तः	पुनः
कुत्र	कदा	एकदा



2. **मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-**

अलम्	अन्तः	बहिः	अधः	उपरि

(क) वृक्षस्य .... खगाः वसन्ति।

(ख) .... विवादेन।

(ग) वर्षाकाले गृहात् .... मा गच्छ।

(घ) मञ्चस्य .... श्रोतारः उपविष्टाः सन्ति।

(ङ) छात्राः विद्यालयस्य .... प्रविशन्ति।

3. **अशुद्धं पदं चिनुत-**

(क) गमन्ति, यच्छन्ति, पृच्छन्ति, धावन्ति। ....

(ख) रामेण, गृहेण, सर्पेण, गजेण। ....

(ग) लतया, मातया, रमया, निशया। ....

(घ) लते, रमे, माते, प्रिये। ....

(ङ) लिखति, गर्जति, फलति, सेवति। ....

4. **मञ्जूषातः समानार्थकपदानि चित्वा लिखत-**

प्रसन्नतायाः	चिकित्सकम्	लब्ध्वा	शरीरस्य	दक्षाः

प्राप्य ....

कुशलाः ....

हर्षस्य ....

देहस्य ....

वैद्यम् ....

5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) मञ्चे कति बालकवयः उपविष्टाः सन्ति?

(ख) के कोलाहलं कुर्वन्ति?

(ग) गजाधरः कम् उद्दिश्य काव्यं प्रस्तौति?

(घ) तुन्दिलः कस्य उपरि हस्तम् आवर्त्तयति?

(ङ) लोके पुनः पुनः कानि भवन्ति?

(च) किं कृत्वा घृतं पिबेत्?

6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा कथायाः पूर्तिं कुरुत-

नासिकायामेव	वारंवारम्	खड्गेन	दूरम्	मित्रता	मक्षिका
व्यजनेन	उपाविशत्	छिन्ना	सुप्तः	प्रियः	

पुरा एकस्य नृपस्य एकः .... वानरः आसीत्। एकदा नृपः .... आसीत्।



वानरः .... तम् अवीजयत्। तदैव एका .... नृपस्य नासिकायाम् ....। यद्यपि वानरः ....व्यजनेन तां निवारयति स्म तथापि सा पुनः पुनः नृपस्य .... उपविशति स्म। अन्ते सः मक्षिकां हन्तुं .... प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु उड्डीय .... गता, किन्तु खड्गप्रहारेण नृपस्य नासिका .... अभवत्। अत एवोच्यते- "मूर्खजनैः सह .... नोचिता।"



7. विलोमपदानि योजयत-

अधः	नीचैः
अन्तः	सुलभम्
दुर्बुद्धे!	उपरि
उच्चैः	बहिः
दुर्लभम्	सुबुद्धे!

ध्यातव्यम्



अस्मिन् पाठे अधः, अन्तः, बहिः, नीचैः, पुनः इत्यादीनि अव्ययपदानि सन्ति। एषां त्रिषु लिङ्गेषु, त्रिषु वचनेषु सर्वासु विभक्तिषु च एकमेव रूपं भवति, विकारो न जायते।

उक्तञ्च–

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

2020-21



0755CH05

पञ्चमः पाठः

पण्डिता रमाबाई





स्त्रीशिक्षाक्षेत्रे अग्रगण्या पण्डिता रमाबाई 1858 तमे ख्रिष्टाब्दे जन्म अलभत। तस्याः पिता अनन्तशास्त्री डोंगरे माता च लक्ष्मीबाई आस्ताम्। तस्मिन् काले स्त्रीशिक्षायाः स्थितिः चिन्तनीया आसीत्। स्त्रीणां कृते संस्कृतशिक्षणं प्रायः प्रचलितं नासीत्। किन्तु डोंगरे रूढिबद्धां धारणां परित्यज्य स्वपत्नीं संस्कृतमध्यापयत्। एतदर्थं सः समाजस्य प्रतारणाम् अपि असहत। अनन्तरं रमा अपि स्वमातुः संस्कृतशिक्षां प्राप्तवती।

कालक्रमेण रमायाः पिता विपन्नः सञ्जातः। तस्याः पितरौ ज्येष्ठा भगिनी च दुर्भिक्षपीडिताः दिवङ्गताः। तदनन्तरं रमा स्व-ज्येष्ठभ्रात्रा सह पद्भ्यां समग्रं भारतम् अभ्रमत्। भ्रमणक्रमे सा कोलकातां प्राप्ता। संस्कृतवैदुष्येण सा तत्र 'पण्डिता' 'सरस्वती' चेति उपाधिभ्यां विभूषिता। तत्रैव सा ब्रह्मसमाजेन प्रभाविता वेदाध्ययनम् अकरोत्। पश्चात् सा स्त्रीणां कृते वेदादीनां शास्त्राणां शिक्षायै आन्दोलनं प्रारब्धवती।

1880 तमे ख्रिष्टाब्दे सा विपिनबिहारीदासेन सह बाकीपुर-न्यायालये विवाहम् अकरोत्। सार्धैकवर्षात् अनन्तरं तस्याः पतिः दिवङ्गतः।

तदनन्तरं सा पुत्र्या मनोरमया सह जन्मभूमिं महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्। नारीणां सम्मानाय शिक्षायै च सा स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती। हण्टर-शिक्षा-आयोगस्य समक्षं नारीशिक्षाविषये सा स्वमतं प्रस्तुतवती। सा उच्चशिक्षार्थम् इंग्लैण्डदेशं गतवती। तत्र ईसाईधर्मस्य स्त्रीविषयकैः उत्तमविचारैः प्रभाविता जाता।

इंग्लैण्डदेशात् रमाबाई अमरीकादेशम् अगच्छत्। तत्र सा भारतस्य विधवास्त्रीणां सहायतार्थम् अर्थसञ्चयम् अकरोत्। भारतं प्रत्यागत्य मुम्बईनगरे सा 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्। अस्मिन् आश्रमे निस्सहायाः स्त्रियः निवसन्ति स्म। तत्र स्त्रियः मुद्रण-टङ्कण- काष्ठकलादीनाञ्च प्रशिक्षणमपि लभन्ते स्म। परम् इदं सदनं पुणेनगरे स्थानान्तरितं जातम्। ततः पुणेनगरस्य समीपे केडगाँव- स्थाने 'मुक्तिमिशन' नाम संस्थानं तया स्थापितम्। अत्र अधुना अपि निराश्रिताः स्त्रियः ससम्मानं जीवनं यापयन्ति।



1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्। सा देश-विदेशानाम् अनेकासु भाषासु निपुणा आसीत्। समाजसेवायाः अतिरिक्तं लेखनक्षेत्रे अपि तस्याः महत्त्वपूर्णम् अवदानम् अस्ति। 'स्त्रीधर्मनीति' 'हाई कास्ट हिन्दू विमेन' इति तस्याः प्रसिद्धं रचनाद्वयं वर्तते।

शब्दार्थाः

परित्यज्य	-	छोड़कर	giving up
अध्यापयत्	-	पढ़ाया	taught
प्रतारणाम्	-	ताड़ना	torture
असहत	-	सहन किया	endured

स्वमातुः	–	अपनी माता से	from her own mother
विपन्नः	–	निर्धन	poor
दुर्भिक्षपीडिताः	–	अकाल पीड़ित	victims of famine
दिवङ्गताः	–	मृत्यु को प्राप्त हो गए	died
उपाधिभ्याम्	–	उपाधियों से	with honourary titles
प्रारब्धवती	–	आरम्भ किया	initiated
सार्धैकवर्षात्	–	डेढ़ वर्ष	one and half year
प्रत्यागच्छत् (प्रति+आगच्छत्)	–	लौट आई	returned
अर्थसञ्चयम्	–	धन सञ्चय	accumulation of wealth
प्रत्यागत्य (प्रति+आगत्य)	–	लौटकर	returning
मुद्रणम्	–	छपाई	printing
टङ्कणम्	–	टङ्कण	typing
निराश्रिताः (निर्+आश्रिताः)	–	बेसहारा	helpless
यापयन्ति	–	बिताते/बिताती हैं	spend
अवदानम्	–	योगदान	contribution







1. एकपदेन उत्तरत-

(क) 'पण्डिता' 'सरस्वती' इति उपाधिभ्यां का विभूषिता?

(ख) रमा कुतः संस्कृतशिक्षां प्राप्तवती?

(ग) रमाबाई केन सह विवाहम् अकरोत्?

(घ) कासां शिक्षायै रमाबाई स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती?

(ङ) रमाबाई उच्चशिक्षार्थं कुत्र अगच्छत्?

2. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) रमायाः पिता समाजस्य प्रतारणाम् असहत।

(ख) पत्युः मरणानन्तरं रमाबाई महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्।

(ग) रमाबाई मुम्बईनगरे 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्।

(घ) 1922 तमे खिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्।

(ङ) स्त्रियः शिक्षां लभन्ते स्म।

3. प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) रमाबाई किमर्थम् आन्दोलनं प्रारब्धवती?

(ख) निःसहायाः स्त्रियः आश्रमे किं किं लभन्ते स्म?

(ग) कस्मिन् विषये रमाबाई-महोदयायाः योगदानम् अस्ति?

(घ) केन रचनाद्वयेन रमाबाई प्रशंसिता वर्तते?



4. अधोलिखितानां पदानां निर्देशानुसारं पदपरिचयं लिखत-

	पदानि	मूलशब्दः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा-	वेदानाम्	वेद	पुँल्लिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्
	पिता	....	....	....	....
	शिक्षायै	....	....	....	....
	कन्याः	....	....	....	....
	नारीणाम्	....	....	....	....
	मनोरमया	....	....	....	....

5. अधोलिखितानां धातूनां लकारं पुरुषं वचनञ्च लिखत-

		धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा-	आसीत्	अस्	लङ्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
	कुर्वन्ति	....	....	....	....
	आगच्छत्	....	....	....	....
	निवसन्ति	....	....	....	....
	गमिष्यति	....	....	....	....
	अकरोत्	....	....	....	....

6. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत-

(क) रमाबाई-महोदयायाः विपिनबिहारीदासेन सह विवाहः अभवत्।

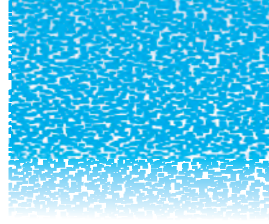
(ख) 1858 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई जन्म अलभत।

(ग) सा उच्चशिक्षार्थम् इंग्लैण्डदेशं गतवती।

(घ) 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्।

(ङ) सा मुम्बईनगरे शारदा-सदनम् अस्थापयत्।

(च) सा स्वमातुः संस्कृतशिक्षां प्राप्तवती।





0755CH06

षष्ठः पाठः

सदाचारः



आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।1।।

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम् ।
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम् ।।2।।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः।।3।।

सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन।।4।।

श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा ।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा ।।5।।

मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जयेत्।।6।।

शब्दार्थाः

रिपुः	–	शत्रु	enemy
उद्यमः	–	परिश्रम	hard work
शरीरस्थः	–	शरीर में स्थित	existing in the body
अवसीदति	–	दु:खी होता है।	become sorrow
श्वः	–	आने वाला कल	tomorrow
कुर्वीत	–	करना चाहिए	should do
पूर्वाह्णे	–	दोपहर से पहले	in the forenoon
आपराह्णिकम्	–	दोपहर के बाद करने योग्य कार्य	work to be done in the afternoon
अनृतम्	–	झूठ	lie
सनातनः	–	सदा से चला आ रहा हो	eternal
स्यात्	–	हो	should be
औदार्यम्	–	उदारता	generosity
ऋजुता	–	सरलता	simplicity
मृदुता	–	कोमलता	softness
कौटिल्यम्	–	कुटिलता, टेढ़ापन	wickedness
सेवेत	–	सेवा करनी चाहिए	should serve
परिवर्जयेत्	–	बचना चाहिए	should avoid
वाचा	–	वाणी से	by speech







1. **सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।**

2. **उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-**

(क) प्रातः काले ईश्वरं स्मरेत्। ☐

(ख) अनृतं ब्रूयात्। ☐

(ग) मनसा श्रेष्ठजनं सेवेत। ☐

(घ) मित्रेण कलहं कृत्वा जनः सुखी भवति। ☐

(ङ) श्वः कार्यम् अद्य कुर्वीत। ☐

3. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) कः न प्रतीक्षते?

(ख) सत्यता कदा व्यवहारे स्यात्?

(ग) किं ब्रूयात्?

(घ) केन सह कलहं कृत्वा नरः सुखी न भवेत्?

(ङ) कः महारिपुः अस्माकं शरीरे तिष्ठति?

4. **रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) मृत्युः न प्रतीक्षते।

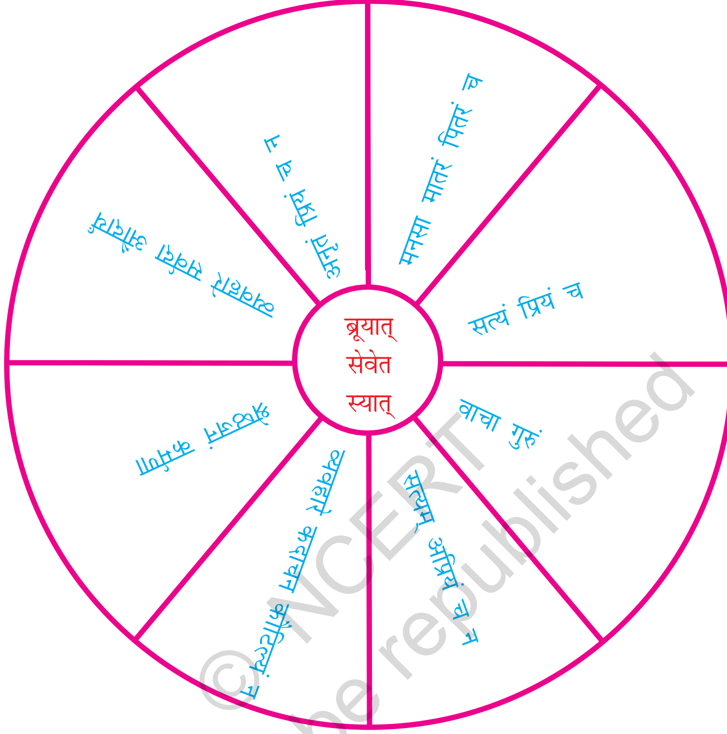
(ख) कलहं कृत्वा नरः दुःखी भवति।

(ग) पितरं कर्मणा सेवेत।

(घ) व्यवहारे मृदुता श्रेयसी।

(ङ) सर्वदा व्यवहारे ऋजुता विधेया।

5. प्रश्नमध्ये त्रीणि क्रियापदानि सन्ति। तानि प्रयुज्य सार्थक-वाक्यानि रचयत–



(क) ....। (ख) ....।

(ग) ....। (घ) ....।

(ङ) ....। (च) ....।

(छ) ....। (ज) ....।

6. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

तथा	न	कदाचन	सदा	च	अपि

(क) भक्तः .... ईश्वरं स्मरति।

(ख) असत्यं .... वक्तव्यम्।

(ग) प्रियं .... सत्यं वदेत्।

(घ) लता मेधा .... विद्यालयं गच्छतः।

(ङ) .... कुशली भवान्?

(च) महात्मागान्धी .... अहिंसां न अत्यजत्।

7. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



लिखति	कक्षायाम्	श्यामपट्टे	लिखन्ति	सः	पुस्तिकायाम्
शिक्षकः	छात्राः	उत्तराणि	प्रश्नम्	ते	

....

....

....

....



0755CH07

सप्तमः पाठः

सङ्कल्पः सिद्धिदायकः



(पार्वती शिवं पतिरूपेण अवाञ्छत्। एतदर्थं सा तपस्यां कर्तुम् ऐच्छत्। सा स्वकीयं मनोरथं मात्रे न्यवेदयत्। तत् श्रुत्वा माता मेना चिन्ताकुला अभवत्।)

मेना – वत्से! मनीषिताः देवताः गृहे एव सन्ति। तपः कठिनं भवति। तव शरीरं सुकोमलं वर्तते। गृहे एव वस। अत्रैव तवाभिलाषः सफलः भविष्यति।

पार्वती – अम्ब! तादृशः अभिलाषः तु तपसा एव पूर्णः भविष्यति। अन्यथा तादृशं पतिं कथं प्राप्स्यामि। अहं तपः एव चरिष्यामि इति मम सङ्कल्पः।

मेना – पुत्रि! त्वमेव मे जीवनाभिलाषः।

पार्वती – सत्यम्। परं मम मनः लक्ष्यं प्राप्तुम् आकुलितं वर्तते। सिद्धिं प्राप्य पुनः तवैव शरणम् आगमिष्यामि। अद्यैव विजयया साकं गौरीशिखरं गच्छामि।

(ततः पार्वती निष्क्रामति)

(पार्वती मनसा वचसा कर्मणा च तपः एव तपति स्म। कदाचिद् रात्रौ स्थण्डिले, कदाचिच्च शिलायां स्वपिति स्म। एकदा विजया अवदत्।)

विजया – सखि! तपःप्रभावात् हिंस्रपशवोऽपि तव सखायः जाताः। पञ्चाग्नि-व्रतमपि त्वम् अतपः। पुनरपि तव अभिलाषः न पूर्णः अभवत्।

पार्वती – अयि विजये! किं न जानासि? मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति। अपि च मनोरथानाम् अगतिः नास्ति।

विजया – त्वं वेदम् अधीतवती। यज्ञं सम्पादितवती। तपःकारणात् जगति तव प्रसिद्धिः। 'अपर्णा' इति नाम्ना अपि त्वं प्रथिता। पुनरपि तपसः फलं नैव दृश्यते।

पार्वती - अयि आतुरहृदये! कथं त्वं चिन्तिता ………।

(नेपथ्ये-अयि भो! अहम् आश्रमवटुः। जलं वाञ्छामि।)

(ससम्भ्रमम्) विजये! पश्य कोऽपि वटुः आगतोऽस्ति।

(विजया झटिति अगच्छत्, सहसैव वटुरूपधारी शिवः तत्र प्राविशत्)

विजया - वटो! स्वागतं ते। उपविशतु भवान्। इयं मे सखी पार्वती। शिवं प्राप्तुम् अत्र तपः करोति।



वटुः - हे तपस्विनि! किं क्रियार्थं पूजोपकरणं वर्तते, स्नानार्थं जलं सुलभम्, भोजनार्थं फलं वर्तते? त्वं तु जानासि एव शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

(पार्वती तूष्णीं तिष्ठति)

वटुः - हे तपस्विनि! किमर्थं तपः तपसि? शिवाय?

(पार्वती पुनः तूष्णीं तिष्ठति)

विजया - *(आकुलीभूय)* आम्, तस्मै एव तपः तपति।

(वटुरूपधारी शिवः सहसैव उच्चैः उपहसति)

वटुः - अयि पार्वति! सत्यमेव त्वं शिवं पतिम् इच्छसि? (उपहसन्) नाम्ना

शिवः अन्यथा अशिवः। श्मशाने वसति। यस्य त्रीणि नेत्राणि, वसनं व्याघ्रचर्म, अङ्गरागः चिताभस्म, परिजनाश्च भूतगणाः। किं तमेव शिवं पतिम् इच्छसि?

पार्वती – *(क्रुद्धा सती)* अरे वाचाल! अपसर। जगति न कोऽपि शिवस्य यथार्थं स्वरूपं जानाति। यथा त्वमसि तथैव वदसि।

(विजयां प्रति) सखि! चल। यः निन्दां करोति सः तु पापभाग् भवति एव, यः शृणोति सोऽपि पापभाग् भवति।

(पार्वती द्रुतगत्या निष्क्रामति। तदैव पृष्ठतः वटोः रूपं परित्यज्य शिवः तस्याः हस्तं गृह्णाति। पार्वती लज्जया कम्पते)



शिवः – पार्वति! प्रीतोऽस्मि तव सङ्कल्पेन। अद्यप्रभृति अहं तव तपोभिः क्रीतदासोऽस्मि।

(विनतानना पार्वती विहसति)



शब्दार्थाः

पतिरूपेण	–	पति के रूप में	as husband
एतदर्थम् (एतद्+अर्थम्)	–	इसके लिये	for this
अवाञ्छत्	–	चाहती थी	desired
मात्रे	–	माता से	to mother
चिन्ताकुला	–	चिन्ता से परेशान	perturbed by anxiety
मनीषिता	–	चाहा गया, इच्छित	desired
तादृशः	–	वैसा	like
अभिलाषः	–	इच्छा	desire
तपसा	–	तपस्या से	by penance
प्राप्स्यामि	–	प्राप्त करूँगी	will get
जीवनाभिलाषः (जीवन+अभिलाषः)	–	जीवन की चाह	life's desire
आकुलितम्	–	परेशान	desperate
साकम्	–	साथ	with
निष्क्रामति	–	निकल जाती है	goes out, exits
मनसा	–	मन से	by heart/ mind
वचसा	–	वचन से	by word
कर्मणा	–	कर्म से	by act
तपति स्म	–	तपस्या करती थी	performed penance
स्थण्डिले	–	नंगी भूमि पर	on barren field

शिलायाम्	–	चट्टान पर	on rock
स्वपिति स्म	–	सोती थी	slept (took rest)
तपःप्रभावात्	–	तपस्या के प्रभाव से	because of penance
अतपः	–	तपस्या की	performed penance
अगतिः	–	गतिहीनता	absence of movement
अधीतवती	–	पढ़ ली	studied
सम्पादितवती	–	सम्पन्न किया	performed
प्रथिता	–	प्रसिद्ध हो गयी	became famous
आतुरहृदये	–	हे व्याकुल हृदयवाली	agitated one
नेपथ्ये	–	परदे के पीछे से	from backstage
आश्रमवटुः	–	आश्रम का ब्रह्मचारी	pupil from hermitage
झटिति	–	जल्दी से	quickly
क्रियार्थम्	–	तप के लिये	for penance
पूजोपकरणम् (पूजा+उपकरणम्)	–	पूजा की सामग्री	means for worship
सुलभम्	–	आसानी से प्राप्त	easily available
धर्मसाधनम्	–	धर्म का साधन	means of religious work
तूष्णीम्	–	चुप	silent
आकुलीभूय	–	परेशान होकर	being disturbed
उपहसति	–	उपहास करता है	makes fun
अन्यथा	–	अन्य प्रकार से	otherwise



श्मशाने	–	श्मशान में	in the cremation ground
अङ्गरागः	–	अङ्गलेप	anointment
परिजनाः	–	मित्र गण	friends
भूतगणाः	–	भूतों की टोली	hosts of ghosts
वाचाल	–	बड़बोला	babbler
अपसर	–	दूर हट	keep away
यथार्थम्	–	वास्तविक	true/real
पापभाग्	–	पापी	sinful
पृष्ठतः	–	पीछे से	from behind
परित्यज्य	–	छोड़कर	after leaving
कम्पते	–	काँपती है	trembles
प्रीतः	–	प्रसन्न	pleased
सङ्कल्पेन	–	सङ्कल्प से	with firm desire
अद्यप्रभृति	–	आज से	from today
क्रीतदासः	–	खरीदा हुआ नौकर	a slave
विनतानना	–	नीचे की ओर मुँह की हुई	keeping downward face
विहसति	–	मुस्कुराती है	smiles







1. **उच्चारणं कुरुत-**

अभवत्	अकथयत्	अगच्छत्
न्यवेदयत्	अपूजयत्	स्वपिति
तपति	प्राविशत्	अवदत्
वदति स्म	वसति स्म	रक्षति स्म
वदति	चरति स्म	करोति स्म
गच्छति स्म	अकरोत्	पठति स्म

2. **उदाहरणम् अनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-**

	(क) एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	वसति स्म	वसतः स्म	वसन्ति स्म
	पूजयति स्म	....	....
	....	रक्षतः स्म	....
	चरति स्म	....	....
	....	....	कुर्वन्ति स्म

	(ख) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	प्रथमपुरुषः	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
	प्रथमपुरुषः	....	अपूजयताम्	अपूजयन्
	प्रथमपुरुषः	अरक्षत्	....	....



(ग) पुरुषः		एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	मध्यमपुरुषः	अवसः	अवसतम्	अवसत
	मध्यमपुरुषः	....	अपूजयतम्	....
	मध्यमपुरुषः	....	....	अचरत

(घ) पुरुषः		एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	उत्तमपुरुषः	अपठम्	अपठाव	अपठाम
	उत्तमपुरुषः	अलिखम्	....	....
	उत्तमपुरुषः	....	अरचयाव	....

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) तपःप्रभावात् के सखायः जाताः?

(ख) पार्वती तपस्यार्थं कुत्र अगच्छत्?

(ग) कः श्मशाने वसति?

(घ) शिवनिन्दां श्रुत्वा का क्रुद्धा जाता?

(ङ) वटुरूपेण तपोवनं कः प्राविशत्?

4. कः/का कं/कां प्रति कथयति-

	कः/का	कम्/काम्
यथा- वत्से! तपः कठिनं भवति?	माता	पार्वतीम्
(क) अहं तपः एव चरिष्यामि।		
(ख) मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति।	....	....
(ग) अपर्णा इति नाम्ना त्वं प्रथिता।	....	....
(घ) पार्वति! प्रीतोऽस्मि तव सङ्कल्पेन।	....	....
(ङ) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।	....	....
(च) अहं तव क्रीतदासोऽस्मि।	....	....

5. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) पार्वती क्रुद्धा सती किम् अवदत्?

(ख) कः पापभाग् भवति?

(ग) पार्वती किं कर्तुम् ऐच्छत्?

(घ) पार्वती कया साकं गौरीशिखरं गच्छति?

6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा समानार्थकानि पदानि लिखत-

माता	मौनम्	प्रस्तरे	जन्तवः	नयनानि

शिलायां ....

पशवः ....

अम्बा ....

नेत्राणि ....

तूष्णीम् ....

7. उदाहरणानुसारं पदरचनां कुरुत-

यथा –वसति स्म = अवसत्

(क) पश्यति स्म = ...

(ख) तपति स्म = ...

(ग) चिन्तयति स्म = ...

(घ) वदति स्म = ...

(ङ) गच्छति स्म = ...



यथा– अलिखत्	=	लिखति स्म।
(क)	=	कथयति स्म।
(ख)	=	नयति स्म।
(ग)	=	पठति स्म।
(घ)	=	धावति स्म।
(ङ)	=	हसति स्म।

ध्यातव्यम्

'स्म' इत्यस्य प्रयोगः।

यदा वर्तमानकालिकैः धातुभिः सह 'स्म' इत्यस्य प्रयोगः भवति तदा ते धातवः भूतकालिकक्रियाणाम् अर्थं प्रकटयन्ति।

यथा– पठति स्म – पढ़ता था।

गच्छति स्म – जाता था।



पञ्चाग्निव्रतम् – चतसृषु दिक्षु अग्निम् आधाय सूर्यस्य निर्निमेषदर्शनं पञ्चाग्निव्रतम्।

अपर्णा – तपस्याक्रमे पर्णानामपि भक्षणं पार्वती त्यक्तवती अतः सा अपर्णा नाम्ना प्रसिद्धा।



0755CH08

अष्टमः पाठः

त्रिवर्णः ध्वजः



(केचन बालकाः काश्चन बालिकाश्च स्वतन्त्रता-दिवसस्य ध्वजारोहणसमारोहे सोत्साहं गच्छन्तः परस्परं संलपन्ति।)

देवेशः – अद्य स्वतन्त्रता-दिवसः। अस्माकं विद्यालयस्य प्राचार्यः ध्वजारोहणं करिष्यति। छात्राश्च सांस्कृतिककार्यक्रमान् प्रस्तोष्यन्ति। अन्ते च मोदकानि मिलिष्यन्ति।



डेविडः – शुचे! जानासि त्वम्? अस्माकं ध्वजः कीदृशः?

शुचिः – अस्माकं देशस्य ध्वजः त्रिवर्णः इति।

सलीमः – रुचे! अयं त्रिवर्णः कथम्?

रुचिः – अस्मिन् ध्वजे त्रयः वर्णाः सन्ति, अतः त्रिवर्णः। किं त्वम् एतेषां वर्णानां नामानि जानासि?

सलीमः – अरे! केशरवर्णः, श्वेतः, हरितः च एते त्रयः वर्णाः।

देवेशः – अस्माकं ध्वजे एते त्रयः वर्णाः किं सूचयन्ति?

सलीमः – शृणु, केशरवर्णः शौर्यस्य, श्वेतः सत्यस्य, हरितश्च समृद्धेः सूचकाः सन्ति।

शुचिः – किम् एतेषां वर्णानाम् अन्यदपि महत्त्वम्?

डेविडः – आम्! कथं न? ध्वजस्य उपरि स्थितः केशरवर्णः त्यागस्य उत्साहस्य च सूचकः। मध्ये स्थितः श्वेतवर्णः सात्त्विकतायाः शुचितायाः च द्योतकः। अधः स्थितः हरितवर्णः वसुन्धरायाः सुषमायाः उर्वरतायाश्च द्योतकः।

तेजिन्दरः – शुचे! ध्वजस्य मध्ये एकं नीलवर्णं चक्रं वर्तते?

शुचिः – आम् आम्। इदम् अशोकचक्रं कथ्यते। एतत् प्रगतेः न्यायस्य च प्रवर्तकम्। सारनाथे अशोकस्तम्भः अस्ति। तस्मात् एव एतत् गृहीतम्।

प्रणवः – अस्मिन् चक्रे चतुर्विंशतिः अराः सन्ति।

मेरी – भारतस्य संविधानसभायां 22 जुलाई 1947 तमे वर्षे समग्रतया अस्य ध्वजस्य स्वीकरणं जातम्?

तेजिन्दरः – अस्माकं त्रिवर्णः ध्वजः स्वाधीनतयाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः। अत एव स्वतन्त्रतादिवसे गणतन्त्रदिवसे च अस्य ध्वजस्य उत्तोलनं समारोहपूर्वकं भवति।

जयतु त्रिवर्णः ध्वजः, जयतु भारतम्।

शब्दार्थाः

त्रिवर्णः ध्वजः	– तीन रंगों वाला झंडा (तिरंगा झंडा)	tricolour flag
संलपन्ति	– वार्तालाप करते हैं/करती हैं	talk
प्रस्तोष्यन्ति	– प्रस्तुत करेंगे/करेंगी	will present
मोदकानि	– लड्डू	a kind of sweet
ऊर्जस्वितायाः	– ऊर्जा की	of energy
अराः	– तीलियाँ	spokes
उत्तोलनम्	– ऊपर उठाना/फहराना	hoisting





1. शुद्धकथनस्य समक्षम् 'आम्' अशुद्धकथनस्य समक्षं 'न' इति लिखत-

(क) अस्माकं राष्ट्रस्य ध्वजे त्रयः वर्णाः सन्ति। ☐

(ख) ध्वजे हरितवर्णः शान्तेः प्रतीकः अस्ति। ☐

(ग) ध्वजे केशरवर्णः शक्त्याः सूचकः अस्ति। ☐

(घ) चक्रे त्रिंशत् अराः सन्ति। ☐

(ङ) चक्रं प्रगतेः द्योतकम्। ☐

2. अधोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं वचनं च लिखत-

पदानि	विभक्तिः	वचनम्
यथा-त्रयाणाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
समृद्धेः	....	....
वर्णानाम्	....	....
उत्साहस्य	....	....
नागरिकैः	....	....
सात्त्विकतायाः	....	....
प्राणानाम्	....	....
सभायाम्	....	....

3. एकपदेन उत्तरत-

(क) अस्माकं ध्वजे कति वर्णाः सन्ति?

(ख) त्रिवर्णे ध्वजे शक्त्याः सूचकः कः वर्णः?

(ग) अशोकचक्रं कस्य द्योतकम् अस्ति?

(घ) त्रिवर्णः ध्वजः कस्य प्रतीकः?

4. एकवाक्येन उत्तरत-

(क) अस्माकं ध्वजस्य श्वेतवर्णः कस्य सूचकः अस्ति?



(ख) अशोकस्तम्भः कुत्र अस्ति?
(ग) त्रिवर्णध्वजस्य उत्तोलनं कदा भवति?
(घ) अशोकचक्रे कति अराः सन्ति?

5. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) अस्माकं त्रिवर्णध्वजः विश्वविजयी भवेत्।
(ख) स्वधर्मात् प्रमादं वयं न कुर्याम।
(ग) एतत् सर्वम् अस्माकं नेतॄणां सद्बुद्धेः सत्फलम्।
(घ) शत्रूणां समक्षं विजयः सुनिश्चितः भवेत्।

6. उदाहरणानुसारं समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

	शब्दाः	विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	पट्टिका	षष्ठी	पट्टिकायाः	पट्टिकयोः	पट्टिकानाम्
	अग्निशिखा	सप्तमी	अग्निशिखायाम्	....	....
	सभा	चतुर्थी	....	सभाभ्याम्	....
	अहिंसा	द्वितीया	अहिंसाम्	....	....
	सफलता	पञ्चमी	....	सफलताभ्याम्	....
	सूचिका	तृतीया	सूचिकया	....	....

7. समुचितमेलनं कृत्वा लिखत-

क	ख
केशरवर्णः	प्रगतेः न्यायस्य च प्रवर्तकम्।
हरितवर्णः	22 जुलाई 1947 तमे वर्षे जातम्।
अशोकचक्रम्	शौर्यस्य त्यागस्य च सूचकः।
त्रिवर्णः ध्वजः	सुषमायाः उर्वरतायाः च सूचकः।
त्रिवर्णध्वजस्य स्वीकरणं	स्वाधीनतायाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः।



0755CH09

नवमः पाठः

अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि



मालिनी – (प्रतिवेशिनीं प्रति) गिरिजे! मम पुत्रः मातुलगृहं प्रति प्रस्थितः काचिद् अन्यां कामपि महिला कार्यार्थं जानासि तर्हि प्रेषय।

गिरिजा – आम् सखि! अद्य प्रातः एव मम सहायिका स्वसुतायाः कृते कर्मार्थं पृच्छति स्म। श्वः प्रातः एव तया सह वार्तां करिष्यामि।

(अग्रिमदिने प्रातः काले षट्वादने एव मालिन्याः गृहघण्टिका आगन्तारं कमपि सूचयति मालिनी द्वारमुदघाटयति पश्यति यत् गिरिजायाः सेविकया दर्शनया सह एका अष्टवर्षदेशीय, बालिका तिष्ठति)



दर्शना – महोदये! भवती कार्यार्थं गिरिजामहोदयां पृच्छति स्म कृपया मम सुतायै अवसरं प्रदाय अनुगृह्णातु भवती।

मालिनी – परमेषा तु अल्पवयस्का प्रतीयते। किं कार्यं करिष्यत्येषा? अयं तु अस्याः अध्ययनस्य क्रीडनस्य च कालः।

दर्शना – एषा एकस्य गृहस्य संपूर्ण कार्यं करोति स्म। सः परिवारः अधुना विदेशं प्रति प्रस्थितः। कार्याभावे अहमेतस्यै कार्यमेवान्वेषयामि स्म येन भवत्सदृशानां कार्यं प्रचलेत् अस्मद्सदृशानां गृहसञ्चालनाय च धनस्य व्यवस्था भवेत्।



मालिनी – परमेतत्तु सर्वथाऽनुचितम्। किं न जानासि यत् शिक्षा तु सर्वेषां बालकानां सर्वासां बालिकानां च मौलिकः अधिकारः।

दर्शना – महोदये! अस्मद् सदृशानां तु मौलिकाः अधिकाराः केवलं स्वोदरपूर्त्ति-रेवास्ति। एतस्य व्यवस्थायै एव अहं सर्वस्मिन् दिने पञ्च-षड्गृहाणां कार्यं करोमि। मम रुग्णः पतिः तु किञ्चिदपि कार्यं न करोति। अतः अहं मम पुत्री च मिलित्वा परिवारस्य भरण-पोषणं कुर्वः। अस्मिन् महार्घताकाले मूलभूतावश्यकतानां कृते एव धनं पर्याप्त न भवति तर्हि कथं विद्यालयशुल्कं, गणवेषं पुस्तकान्यादीनि क्रेतुं धनमानेष्यामि।



मालिनी – अहो! अज्ञानं भवत्याः। किं न जानासि यत् नवोत्तर-द्वि-सहस्र (2009) तमे वर्षे सर्वकारेण सर्वेषां बालकानां, सर्वासां बालानां कृते शिक्षायाः मौलिकाधिकारस्य घोषणा कृता । यदनुसारं षड्वर्षेभ्यः आरभ्य चतुर्दशवर्षपर्यन्तं सर्वे बालाः समीपस्थं सर्वकारीयं विद्यालयं प्राप्य न केवलं निःशुल्कं शिक्षामेव प्राप्स्यन्ति अपितु निःशुल्कं गणवेषं पुस्तकानि, पुस्तकस्यूतम्, पादत्राणम्, माध्याह्नभोजनम्, छात्रवृत्तिम् इत्यादिकं सर्वमेव प्राप्स्यन्ति।

दर्शना – अप्येवम् (आश्चर्येण मालिनी पश्यति)

मालिनी – आम्। वस्तुतः एवमेव।

दर्शना – (कृतार्थतां प्रकटयन्ती) अनुगृहीताऽस्मि महोदये! एतद् बोधनाय। अहम् अद्यैवास्याः प्रवेशं समीपस्थे विद्यालये कारयिष्यामि।

दर्शनायाः – पुत्री– (उल्लासेन सह) अहं विद्यालयं गमिष्यामि! अहमपि पठिष्यामि! (इत्युक्त्वा करतलवादनसहितं नृत्यति मालिनीं प्रति च कृतज्ञतां ज्ञापयति)

शब्दार्थाः

प्रतिवेशिनी	–	पड़ोसन	neighbour
प्रेषय	–	भिजवा दो	send
श्वः	–	आने वाला कल	tomorrow
गृहघण्टिका	–	घण्टी	bell
अष्टवर्षदेशीया	–	लगभग आठ साल की	approximately eight years old
क्षमा	–	समर्थ	able to do

भवत्सदृशानाम्	-	आप जैसों का	like yours
अस्मदसदृशानाम्	-	हम जैसों का	people like us
स्वोदरपूर्त्तिरेव	-	स्व+उदरपूर्त्ति+एव अपना पेट भरना ही	to arrange for food
मद्यपः	-	शराब पीने वाला	drunker
महार्घताकाले	-	महंगाई के समय में	in todays age of dearness?
पादत्राणम्	-	जूते	shoes



1. **उच्चारण कुरुत-**

अग्रिमदिने, षड्वादने, अष्टवर्षदेशीया, अनुगृह्णातु, भवत्सदृशानाम्, गृहसञ्चालनाय, व्यवस्थायै, महार्घताकाले, अद्यैवास्याः, करतलवादसहितम्!

2. **एकपदेन उत्तराणि लिखत-**

(क) गिरिजायाः गृहसेविकायाः नाम किमासीत्?

(ख) दर्शनायाः पुत्री कति वर्षीया आसीत्?

(ग) अद्यत्वे शिक्षा अस्माकं कीदृशः अधिकारः?

(घ) दर्शनायाः पुत्री कथं नृत्यति?

3. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) अष्टवर्षदेशीया दर्शनायाः पुत्री किं समर्थाऽसीत्?

(ख) दर्शना कति गृहाणां कार्यं करोति स्म?



(ग) मालिनी स्वप्रतिवेशिनीं प्रति किं कथयति?

(घ) अद्यत्वे छात्राः विद्यालये किं किं निःशुल्कं प्राप्नुवन्ति?

4. रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) मालिनी द्वारमुद्घाटयति?

(ख) शिक्षा सर्वेषां बालानां मौलिकः अधिकारः।

(ग) दर्शना आश्चर्येण मालिनीं पश्यति।

(घ) दर्शना तस्याः पुत्री च मिलित्वा परिवारस्य भरणपोषणं कुरुतः स्म।

5. सन्धि विच्छेदं पूरयत-

(क) ग्रामं प्रति	-	ग्रामम्	+	________
(ख) कार्यार्थम्	-	________	+	अर्थम्
(ग) करिष्यत्येषा	-	करिष्यति	+	________
(घ) स्वोदरपूर्तिः	-	________	+	उदरपूर्तिः
(ङ) अप्येवम्	-	अपि	+	________

6. (अ) समानार्थकपदानि मेलयत-

आश्चर्येण	पठनस्य
उल्लासेन	समयः
परिवारस्य	प्रसन्नतया
अध्ययनस्य	विस्मयेन
कालः	कुटुम्बस्य

(आ) विलोमपदानि मेलयत-

क्रेतुम्	दूरस्थम्
श्वः	कथयति

ग्रामम्	विक्रेतुम्
समीपस्थम्	ह्यः
पृच्छति	नगरम्

7. विशेषणपदैः सह विशेष्यपदानि योजयत-

सर्वेषाम्	बालिकानाम्
मौलिकः	विद्यालयम्
एषा	बालकानाम्
सर्वकारीयम्	अधिकारः
समीपस्थे	गणवेषम्
सर्वासाम्	अल्पवयस्का
निःशुल्कम्	विद्यालये

ध्यातव्यम्



'सर्वे पठन्तु अग्रे सरन्तु' च इति भावनामङ्गीकृत्य विकसितोऽयं एकः संवादात्मकः पाठः। प्रायेण आर्थिकदृष्ट्या दरिद्रपरिवारेषु लघु लघु बालकाः चायादिविपणिसु अन्येषु च गृहेषु कार्ये नियोजिताः क्रियन्ते येन धनस्य अर्जनं भवेत् तेषां गृहस्य कार्यं चलेत्। एवं कृते ते जनाः स्वसंततीः शिक्षायाः मौलिकाधिकारात् वञ्चयन्ति। प्रारम्भे शिक्षा यः केवलं संवैधानिकोऽधिकार आसीत् स इदानीं मौलिकाधिकारः जातः। इमामेव भावानां बोधयितुं पाठेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

दशमः पाठः

विश्वबन्धुत्वम्





उत्सवे, व्यसने, दुर्भिक्षे, राष्ट्रविप्लवे, दैनन्दिनव्यवहारे च यः सहायतां करोति सः बन्धुः भवति। यदि विश्वे सर्वत्र एतादृशः भावः भवेत् तदा विश्वबन्धुत्वं सम्भवति।

परन्तु अधुना निखिले संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति। मानवाः परस्परं न विश्वसन्ति। ते परस्य कष्टं स्वकीयं कष्टं न गणयन्ति। अपि च समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति, तेषाम् उपरि स्वकीयं प्रभुत्वं स्थापयन्ति। संसारे सर्वत्र विद्वेषस्य, शत्रुतायाः, हिंसायाः च भावना दृश्यते। देशानां विकासः अपि अवरुद्धः भवति।

इयम् महती आवश्यकता वर्तते यत् एकः देशः अपरेण देशेन सह निर्मलेन हृदयेन बन्धुतायाः व्यवहारं कुर्यात्। विश्वस्य जनेषु इयं भावना आवश्यकी। ततः विकसिताविकसितयोः देशयोः मध्ये स्वस्था स्पर्धा भविष्यति। सर्वे देशाः ज्ञानविज्ञानयोः क्षेत्रे मैत्रीभावनया सहयोगेन च समृद्धिं प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।

सूर्यस्य चन्द्रस्य च प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति। प्रकृतिः अपि सर्वेषु समत्वेन व्यवहरति। तस्मात् अस्माभिः सर्वैः परस्परं वैरभावम् अपहाय विश्वबन्धुत्वं स्थापनीयम्।

अतः विश्वस्य कल्याणाय एतादृशी भावना भवेत्–

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

शब्दार्थाः

व्यसने	–	व्यक्तिगत संकट पर	during individual crisis
दुर्भिक्षे	–	अकाल पड़ने पर	during femine
राष्ट्रविप्लवे	–	राष्ट्र/देश पर आपदा आने पर	during national crisis
विश्वबन्धुत्वम्	–	विश्व के प्रति भाई–चारा	universal brotherhood
विश्वसन्ति	–	विश्वास करते हैं	believe
स्वकीयम्	–	अपना	own
उपेक्षाभावम्	–	अनादर की भावना	disregard
विद्वेषस्य	–	शत्रुता का	of hatred
अवरुद्धः	–	बाधित	obstructed
स्पर्धा	–	होड़, मुकाबला	competition
ध्यातव्यम्	–	ध्यान देना चाहिए	should attend
ज्ञायते	–	जाना जाता है	known
समत्वेन	–	समान भाव से	equally
अपहाय	–	छोड़कर	giving up
परो वेति	–	अथवा पराया	or others
लघुचेतसाम्	–	क्षुद्र हृदय वालों का	of narrow minded people
वसुधैव(वसुधा+एव)	–	धरती ही	only the earth
कुटुम्बकम्	–	परिवार	family







1. उच्चारणं कुरुत-

दुर्भिक्षे	राष्ट्रविप्लवे	विश्वबन्धुत्वम्
विश्वसन्ति	उपेक्षाभावम्	विद्वेषस्य
ध्यातव्यम्	दु:खभाक्	प्रदर्शयन्ति

2. मञ्जूषातः समानार्थकपदानि चित्वा लिखत-

परस्य दु:खम् आत्मानम् बाधितः परिवारः सम्पन्नम् त्यक्त्वा सम्पूर्णे

स्वकीयम् ....
अवरुद्धः ....
कुटुम्बकम् ....
अन्यस्य ....
अपहाय ....
समृद्धम् ....
कष्टम् ....
निखिले ....

3. रेखाङ्कितानि पदानि संशोध्य लिखत-

(क) छात्राः क्रीडाक्षेत्रे <u>कन्दुकात्</u> क्रीडन्ति।

(ख) <u>ते</u> बालिकाः मधुरं गायन्ति।

(ग) अहं <u>पुस्तकालयेन</u> पुस्तकानि आनयामि।



(घ) त्वं किं नाम?

(ङ) गुरुं नमः।

4. **मञ्जूषातः विलोमपदानि चित्वा लिखत-**

अधुना	मित्रतायाः	लघुचेतसाम्	गृहीत्वा	दुःखिनः	दानवाः

शत्रुतायाः ....

पुरा ....

मानवाः ....

उदारचरितानाम् ....

सुखिनः ....

अपहाय ....

5. **अधोलिखितपदानां लिङ्गं, विभक्तिं वचनञ्च लिखत-**

पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
बन्धुः	....	....	....
देशान्	....	....	....
घृणायाः	....	....	....
कुटुम्बकम्	....	....	....
रक्षायाम्	....	....	....
ज्ञानविज्ञानयोः	....	....	....

6. कोष्ठकेषु दत्तेषु शब्देषु समुचितां विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय)

.... उभयतः गोपालिकाः। (कृष्ण)

(ख) ग्रामं परितः गोचारणभूमिः। (ग्राम)

.... परितः भक्ताः। (मन्दिर)

(ग) सूर्याय नमः। (सूर्य)

.... नमः। (गुरु)

(घ) वृक्षस्य उपरि खगाः। (वृक्ष)

.... उपरि सैनिकः। (अश्व)

7. कोष्ठकात् समुचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) .... नमः। (हरिं/हरये)

(ख) .... परितः कृषिक्षेत्राणि सन्ति। (ग्रामस्य/ग्रामम्)

(ग) .... नमः। (अम्बायाः/अम्बायै)

(घ) .... उपरि अभिनेता अभिनयं करोति। (मञ्चस्य/मञ्चम्)

(ङ) .... उभयतः पुत्रौ स्तः। (पितरम्/पितुः)



ध्यातव्यम्



क्रियामाधृत्य यत्र द्वितीयातृतीयाद्याः विभक्तयः भवन्ति, ताः 'कारकविभक्तयः' इत्युच्यन्ते। यथा–रामः ग्रामं गच्छति। बालकाः यानेन यान्ति इत्यादयः।।

पदमाश्रित्य प्रयुक्ता विभक्तिः 'उपपदविभक्तिः' इत्युच्यते।

यथा–ग्रामं परितः वनम्। रामेण सह लक्ष्मणः गच्छति। अत्र 'परितः' इति योगे ग्रामपदात् द्वितीया तथा च 'सह' इति योगे रामपदात् प्रयुक्ता तृतीया उपपदविभक्तिः अस्ति।





एकादशः पाठः

समवायो हि दुर्जयः



पुरा एकस्मिन् वृक्षे एका चटका प्रतिवसति स्म। कालेन तस्याः सन्ततिः जाता। एकदा कश्चित् प्रमत्तः गजः तस्य वृक्षस्य अधः आगत्य तस्य शाखां शुण्डेन अत्रोटयत्। चटकायाः नीडं भुवि अपतत्। तेन अण्डानि विशीर्णानि। अथ सा चटका व्यलपत्। तस्याः विलापं श्रुत्वा काष्ठकूटः नाम खगः दुःखेन ताम् अपृच्छत्–"भद्रे, किमर्थं विलपसि?" इति।

चटकावदत्–"दुष्टेनैकेन गजेन मम सन्ततिः नाशिता। तस्य गजस्य वधेनैव मम दुःखम् अपसरेत्।" ततः काष्ठकूटः तां वीणारवा-नाम्न्याः मक्षिकायाः समीपम् अनयत्। तयोः वार्तां श्रुत्वा मक्षिकावदत्–"ममापि मित्रं मण्डूकः मेघनादः अस्ति। शीघ्रं तमुपेत्य यथोचितं करिष्यामः।" तदानीं तौ मक्षिकया सह गत्वा मेघनादस्य पुरः सर्वं वृत्तान्तं न्यवेदयताम्।

मेघनादः अवदत्– "यथाहं कथयामि तथा कुरुतम्। मक्षिके! प्रथमं त्वं मध्याह्ने तस्य गजस्य कर्णे शब्दं कुरु, येन सः नयने निमील्य स्थास्यति। तदा काष्ठकूटः चञ्च्वा तस्य नयने स्फोटयिष्यति। एवं सः गजः अन्धः भविष्यति। तृषार्तः सः जलाशयं गमिष्यति। मार्गे महान् गर्त्तः अस्ति। तस्य



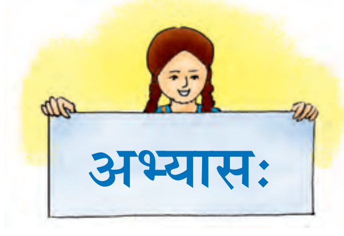
अन्तिके अहं स्थास्यामि शब्दं च करिष्यामि। मम शब्देन तं गर्तं जलाशयं मत्वा स तस्मिन्नेव गर्ते पतिष्यति मरिष्यति च।'' अथ तथा कृते सः गजः मध्याह्ने मण्डूकस्य शब्दम् अनुसृत्य महतः गर्तस्य अन्तः पतितः मृतः च। तथा चोक्तम्–

'बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः'।

शब्दार्थाः

पुरा	–	पहले, पुराने समय में	ago
शुण्डेन	–	सूँड से	by trunk
नीडम्	–	घोंसले को	nest
विशीर्णानि	–	नष्ट हो गए	destroyed
तमुपेत्य (तम्+उपेत्य)	–	उसके पास जाकर	approaching him
मध्याह्ने	–	दोपहर में	at noon
निमील्य	–	बन्द करके	closing
स्थास्यति	–	रुक जाएगा	will stay
स्फोटयिष्यति	–	फोड़ देगा	will spoil
तृषार्तः (तृषा + आर्तः)	–	प्यास से पीड़ित	thirsty
गर्तः	–	गड्ढा	pit
तथा कृते	–	वैसा करने पर	doing so
अनुसृत्य	–	अनुसरण करके	following
पतितः	–	गिर गया	fell down
मृतः	–	मर गया	died
चोक्तम् (च + उक्तम्)	–	और कहा गया है	and said
दुर्जयः	–	कठिनता से जीतने योग्य	difficult to win
बहूनामप्यसाराणाम् (बहूनाम्+अपि+असाराणाम्)	–	अनेक निर्बलों का	several weak ones
समवायः	–	समूह, संगठन	group





1. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) वृक्षे का प्रतिवसति स्म?

(ख) वृक्षस्य अधः कः आगतः?

(ग) गजः केन शाखाम् अत्रोटयत्?

(घ) काष्ठकूटः चटकां कस्याः समीपम् अनयत्?

(ङ) मक्षिकायाः मित्रं कः आसीत्?

2. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) कालेन चटकायाः सन्ततिः जाता।

(ख) चटकायाः नीडं भुवि अपतत्।

(ग) गजस्य वधेनैव मम दुःखम् अपसरेत्।

(घ) काष्ठकूटः चञ्च्वा गजस्य नयने स्फोटयिष्यति।

3. मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

करिष्यामि	गमिष्यति	अनयत्	पतिष्यति	स्फोटयिष्यति	त्रोटयति

(क) काष्ठकूटः चञ्च्वा गजस्य नयने .... ।

(ख) मार्गे स्थितः अहमपि शब्दं .... ।

(ग) तृषार्तः गजः जलाशयं .... ।

(घ) गजः गर्ते .... ।

(ङ) काष्ठकूटः तां मक्षिकायाः समीपं .... ।

(च) गजः शुण्डेन वृक्षशाखाः .... ।



4. **प्रश्नानाम् उत्तराणि एकवाक्येन लिखत-**

(क) चटकायाः विलापं श्रुत्वा काष्ठकूटः तां किम् अपृच्छत्?

(ख) चटकायाः काष्ठकूटस्य च वार्तां श्रुत्वा मक्षिका किम् अवदत्?

(ग) मेघनादः मक्षिकां किम् अवदत्?

(घ) चटका काष्ठकूटं किम् अवदत्?

5. **उदाहरणमनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-**

(क)

	पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	**प्रथमपुरुषः**	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
	प्रथमपुरुषः	....	पतिष्यतः	....
	प्रथमपुरुषः	....	....	मरिष्यन्ति

(ख)

	पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	**मध्यमपुरुषः**	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
	मध्यमपुरुषः	....	धाविष्यथः	....
	मध्यमपुरुषः	....	....	क्रीडिष्यथ

(ग)

	पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	**उत्तमपुरुषः**	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः
	उत्तमपुरुषः	....	हसिष्यावः	....
	उत्तमपुरुषः	....	....	द्रक्ष्यामः

6. उदाहरणानुसारं 'स्म' शब्दं योजयित्वा भूतकालिकक्रियां रचयत-

यथा–अवसत् – वसति स्म।

अपठत् – ………………….।

अत्रोटयत् – ………………….।

अपतत् – ………………….।

अपृच्छत् – ………………….।

अवदत् – ………………….।

अनयत् – ………………….।

7. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) …………………… बालिका मधुरं गायति। (एकम्, एका, एकः)

(ख) …………………… कृषकाः कृषिकर्माणि कुर्वन्ति। (चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि)

(ग) …………………… पत्राणि सुन्दराणि सन्ति। (ते, ताः, तानि)

(घ) धेनवः दुग्धं …………………… । (ददाति, ददति, ददन्ति)

(ङ) वयं संस्कृतम् …………………… । (अपठम्, अपठन्, अपठाम)





द्वादशः पाठः

विद्याधनम्



न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥ 1 ॥

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या-विहीनः पशुः ॥ 2 ॥

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ 3 ॥

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयः
धेनुः कामदुघा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा ।
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम्
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु॥ 4 ॥

शब्दार्थाः

चौरहार्यम्	–	चोरों के द्वारा चुराने योग्य	to be stolen by a thief
राजहार्यम्	–	राजा के द्वारा छीनने योग्य	to be attacked by a king
भ्रातृभाज्यम्	–	भाइयों के द्वारा बाँटने योग्य	to be divided among brothers
भारकारि	–	भार बढ़ाने वाली	burden
प्रच्छन्नगुप्तम्	–	अत्यन्त गुप्त	hidden
भोगकरी	–	भोग का साधन उपलब्ध कराने वाली	giving objects of pleasure
परा	–	सबसे बड़ी	the greatest
राजसु	–	राजाओं में	among kings
केयूराः	–	बाजूबन्द	bracelets
चन्द्रोज्ज्वला (चन्द्र+उज्ज्वला)	–	चन्द्रमा के समान चमकदार	as bright as the moon
विलेपनम्	–	शरीर पर लेप करने योग्य सुगन्धित-द्रव्य (चन्दन, केसर आदि)	anointing
नालङ्कृता (न+अलङ्कृता)	–	नहीं सजाया हुआ	undecorated
मूर्धजाः	–	वेणी, चोटी	plait (hair)
वाण्येका (वाणी+एका)	–	एकमात्र वाणी	speech alone
समलङ्करोति	–	अच्छी तरह सुशोभित करती है	decorates
संस्कृता	–	संस्कारयुक्त (परिष्कृत)	well cultured
धार्यते	–	धारण की जाती है	is borne
क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि (क्षीयन्ते+अखिलभूषणानि	–	सम्पूर्ण आभूषण नष्ट हो जाते हैं	all ornaments perish



भाग्यक्षये	-	अच्छे दिन बीत जाने पर	when good days end
आश्रयः	-	सहारा	helper
कामदुघा	-	इच्छानुसर फल देने वाली	yielding all desired objects
सत्कारायतनम्	-	सम्मान का केन्द्र या समूह	storehouse of respects
रत्नैर्विना	-	रत्नों से रहित	without jewells
विद्याधिकारम्	-	विद्या पर अधिकार	mastery over learning
तस्मादन्यमुपेक्ष्य (तस्मात्+अन्यम्+उपेक्ष्य)	-	अतः दूसरे सबको छोड़कर	therefore giving up others





1. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

(क) विद्या राजसु पूज्यते। ☐

(ख) वाग्भूषणं भूषणं न। ☐

(ग) विद्याधनं सर्वधनेषु प्रधानम्। ☐

(घ) विदेशगमने विद्या बन्धुजनः न भवति। ☐

(ङ) सर्वं विहाय विद्याधिकारं कुरु। ☐

2. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं, विभक्तिं वचनञ्च लिखत-

पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
नरस्य	....	....	....

2020-21

गुरूणाम्	....	....	....
केयूराः	....	....	....
कीर्तिम्	....	....	....
भूषणानि	....	....	....

3. श्लोकांशान् योजयत-

क	ख
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनम्	हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः।
केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषम्	न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
न चौरहार्यं न च राजहार्यम्	या संस्कृता धार्यते।
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा	विद्या-विहीनः पशुः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषम्	रत्नैर्विना भूषणम्।

4. एकपदेन प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) कः पशुः?

(ख) का भोगकरी?

(ग) के पुरुषं न विभूषयन्ति?

(घ) का एका पुरुषं समलङ्करोति?

(ङ) कानि क्षीयन्ते?

5. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) विद्याविहीनः <u>नरः</u> पशुः अस्ति।

(ख) <u>विद्या</u> राजसु पूज्यते।



(ग) चन्द्रोज्ज्वलाः हाराः पुरुषं न अलङ्कुर्वन्ति।

(घ) पिता हिते नियुङ्क्ते।

(ङ) विद्याधनं सर्वप्रधानं धनमस्ति।

(च) विद्या दिक्षु कीर्तिं तनोति।

6. पूर्णवाक्येन प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) गुरूणां गुरुः का अस्ति?

(ख) कीदृशी वाणी पुरुषं समलङ्करोति?

(ग) व्यये कृते किं वर्धते?

(घ) भाग्यक्षये आश्रयः कः?

7. मञ्जूषातः पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्गपदानि चित्वा लिखत-

विद्या धनम् संस्कृता सततम् कुसुमम् मूर्धजाः पशुः गुरुः रतिः

	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
यथा-	हाराः	अलङ्कृता	भूषणम्
	....	....	....
	....	....	....
	....	....	....



0755CH13

त्रयोदशः पाठः

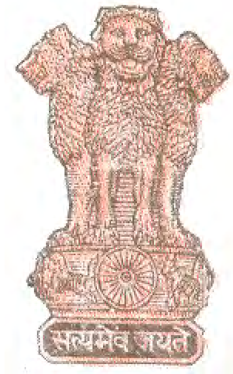
अमृतं संस्कृतम्



विश्वस्य उपलब्धासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा भाषास्ति। भाषेयं अनेकाषां भाषाणां जननी मता। प्राचीनयोः ज्ञानविज्ञानयोः निधिः अस्यां सुरक्षितः। संस्कृतस्य महत्त्वविषये केनापि कथितम् – 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'।

इयं भाषा अतीव वैज्ञानिकी। केचन कथयन्ति यत् संस्कृतमेव सङ्गणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा। अस्याः वाङ्मयं वेदैः, पुराणैः, नीतिशास्त्रैः चिकित्साशास्त्रादिभिश्च समृद्धमस्ति। कालिदासादीनां विश्वकवीनां काव्यसौन्दर्यम् अनुपमम्। कौटिल्यरचितम् अर्थशास्त्रं जगति प्रसिद्धमस्ति। गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमम् आर्यभटः अकरोत्। चिकित्साशास्त्रे चरकसुश्रुतयोः योगदानं विश्वप्रसिद्धम्। संस्कृते यानि अन्यानि शास्त्राणि विद्यन्ते तेषु वास्तुशास्त्रं, रसायनशास्त्रं, खगोलविज्ञानं, ज्योतिषशास्त्रं, विमानशास्त्रम् इत्यादीनि उल्लेखनीयानि।

संस्कृते विद्यमानाः सूक्तयः अभ्युदयाय प्रेरयन्ति, यथा – सत्यमेव जयते, वसुधैव कुटुम्बकम्, विद्ययाऽमृतमश्नुते, योगः कर्मसु कौशलम् इत्यादयः। सर्वभूतेषु आत्मवत् व्यवहारं कर्तुं संस्कृतभाषा सम्यक् शिक्षयति।



केचन कथयन्ति यत् संस्कृतभाषायां केवलं धार्मिकं साहित्यम् वर्तते– एषा धारणा समीचीना नास्ति। संस्कृतग्रन्थेषु मानवजीवनाय विविधाः विषयाः समाविष्टाः सन्ति। महापुरुषाणां

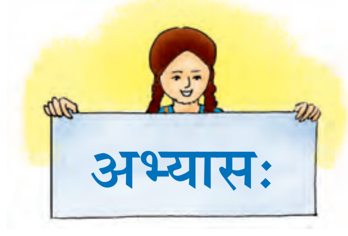
मतिः, उत्तमजनानां धृतिः सामान्यजनानां जीवनपद्धतिः च वर्णिताः सन्ति। अतः अस्माभिः संस्कृतम् अवश्यमेव पठनीयम्। तेन मनुष्यस्य समाजस्य च परिष्कारः भवेत्।
उक्तञ्च–

अमृतं संस्कृतं मित्र !
सरसं सरलं वचः ।
भाषासु महनीयं यद्
ज्ञानविज्ञानपोषकम् ॥

शब्दार्थाः

भाषेयम् (भाषा+इयम्)	–	यह भाषा	this language
मता	–	मानी गई है	is accepted
निधिः	–	खजाना	treasure
विचार्य	–	विचार कर	considering
वाङ्मयम्	–	साहित्य	literature
अनुपमम्	–	अतुलनीय	incomparable
जगति	–	संसार में	in the world
रसायनशास्त्रम्	–	रसायन शास्त्र	chemistry
खगोलविज्ञानम्	–	अन्तरिक्षविज्ञान	astronomy
धृतिः	–	धैर्य	patience
पोषकम्	–	समर्थक	supporter





1. **उच्चारणं कुरुत-**

उपलब्धासु	सङ्गणकस्य
चिकित्साशास्त्रम्	वैशिष्ट्यम्
भूगोलशास्त्रम्	वाङ्मये
विद्यमानाः	अर्थशास्त्रम्

2. **प्रश्नानाम् एकपदेन उत्तराणि लिखत-**

(क) का भाषा प्राचीनतमा?

(ख) शून्यस्य प्रतिपादनं कः अकरोत्?

(ग) कौटिल्येन रचितं शास्त्रं किम्?

(घ) कस्याः भाषायाः काव्यसौन्दर्यम् अनुपमम्?

(ङ) काः अभ्युदयाय प्रेरयन्ति?

3. **प्रश्नानाम् उत्तराणि एकवाक्येन लिखत-**

(क) सङ्गणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा का?

(ख) संस्कृतस्य वाङ्मयं कैः समृद्धमस्ति?

(ग) संस्कृतं किं शिक्षयति?

(घ) अस्माभिः संस्कृतं किमर्थं पठनीयम् ?



4. इकारान्त-स्त्रीलिङ्गशब्दरूपम् अधिकृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

गति (प्रथमा)	गतिः	गती	गतयः
मति (प्रथमा)	....	....	मतयः
बुद्धि (द्वितीया)	बुद्धिम्	बुद्धी	बुद्धीः
प्रीति (द्वितीया)	....	प्रीती	....
नीति (तृतीया)	नीत्या	नीतिभ्याम्	नीतिभिः
शान्ति (तृतीया)	....	....	शान्तिभिः
मति (चतुर्थी)	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
प्रकृति (चतुर्थी)	......../........	प्रकृतिभ्याम्	....
कीर्ति (पञ्चमी)	कीर्त्याः/कीर्तेः	कीर्तिभ्याम्	कीर्तिभ्यः
गीति (पञ्चमी)	......../........	गीतिभ्याम्	....
सूक्ति (षष्ठी)	सूक्तेः/सूक्त्याः	सूक्त्योः	सूक्तीनाम्
कृति (षष्ठी)	......../........	....	कृतीनाम्
धृति (सप्तमी)	धृतौ/धृत्याम्	धृत्योः	धृतिषु
भीति (सप्तमी)	भीतौ/.......	....	....
मति (सम्बोधन)	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

5. रेखाङ्कितानि पदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) संस्कृते ज्ञानविज्ञानयोः निधिः सुरक्षितोऽस्ति।

(ख) संस्कृतमेव सङ्गणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा।

(ग) शल्यक्रियायाः वर्णनं संस्कृतसाहित्ये अस्ति।

(घ) वरिष्ठान् प्रति अस्माभिः प्रियं व्यवहर्त्तव्यम्।

6. उदाहरणानुसारं पदानां विभक्तिं वचनञ्च लिखत-

पदानि	विभक्तिः	वचनम्
यथा-संस्कृतेः	षष्ठी	एकवचनम्
गतिः	....	....
नीतिम्	....	....
सूक्तयः	....	....
शान्त्या	....	....
प्रीत्यै	....	....
मतिषु	....	....

7. यथायोग्यं संयोज्य लिखत-

क	ख
कौटिल्येन	अभ्युदयाय प्रेरयन्ति।
चिकित्साशास्त्रे	ज्ञानविज्ञानपोषकम्।
शून्यस्य आविष्कर्ता	अर्थशास्त्रं रचितम्।
संस्कृतम्	चरकसुश्रुतयोः योगदानम्।
सूक्तयः	आर्यभटः।



ध्यातव्यम्

संस्कृति-स्मृति-नीति-सूक्ति-परिस्थिति-पद्धति-दृष्टि-धृति-शान्ति-प्रीति-इत्यादयः शब्दाः मति-शब्दवत् स्त्रीलिङ्गे प्रयुक्ताः भवन्ति।

एतेषां शब्दानां चतुर्थी-पञ्चमी-षष्ठी-सप्तमी-विभक्तीनामेकवचने द्वे द्वे रूपे भवतः। यथा-गत्यै-गतये, गत्याः-गतेः, गत्याम्-गतौ।



गणितशास्त्रम्	-	Mathematics; Comprises Arithmetic, Algebra and Geometry
चिकित्साशास्त्रम्	-	Medical Science (Administering remedies or medicine)
वास्तुशास्त्रम्	-	Architecture
रसायनशास्त्रम्	-	Chemistry
ज्योतिषशास्त्रम्	-	Astronomy
विमानशास्त्रम्	-	Aeronautics





चतुर्दशः पाठः

अनारिकायाः जिज्ञासा



ऋकारान्तपुँल्लिङ्गः

बालिकायाः अनारिकायाः मनसि सर्वदा महती जिज्ञासा भवति। अतः सा बहून् प्रश्नान् पृच्छति। तस्याः प्रश्नैः सर्वेषां बुद्धिः चक्रवत् भ्रमति।

प्रातः उत्थाय सा अन्वभवत् यत् तस्याः मनः प्रसन्नं नास्ति। मनोविनोदाय सा भ्रमितुं गृहात् बहिः अगच्छत्। भ्रमणकाले सा अपश्यत् यत् मार्गाः सुसज्जिताः सन्ति। सा चिन्तयति – किमर्थम् इयं सज्जा? सा अस्मरत् यत् अद्य तु मन्त्री आगमिष्यति। सः अत्र किमर्थम् आगमिष्यति इति विषये तस्याः जिज्ञासाः प्रारब्धाः। गृहम् आगत्य सा पितरम् अपृच्छत्– "पितः! मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?" पिता अवदत्–"पुत्रि! नद्याः उपरि नवीनः सेतुः निर्मितः। तस्य उद्घाटनार्थं मन्त्री आगच्छति।" अनारिका पुनः अपृच्छत्–"पितः! किं मन्त्री सेतोः निर्माणम् अकरोत्?" पिता अकथयत्–"न हि पुत्रि! सेतोः निर्माणं कर्मकराः अकुर्वन्।" पुनः अनारिकायाः प्रश्नः आसीत्–"यदि कर्मकराः सेतोः निर्माणम् अकुर्वन्, तदा मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?" पिता अवदत्–"यतो हि सः अस्माकं देशस्य मन्त्री।" "पितः! सेतोः निर्माणाय प्रस्तराणि कुतः आयान्ति? किं तानि मन्त्री ददाति?"



विरक्तभावेन पिता उदतरत्–"अनारिके! प्रस्तराणि जनाः पर्वतेभ्यः आनयन्ति।" "पितः! तर्हि किम्, एतदर्थं मन्त्री धनं ददाति? तस्य पार्श्वे धनानि कुतः आगच्छन्ति?" एतान् प्रश्नान् श्रुत्वा पिताऽवदत्–"अरे! प्रजाः धनं प्रयच्छन्ति।" विस्मिता अनारिका पुनः अपृच्छत्–"पितः! कर्मकराः पर्वतेभ्यः प्रस्तराणि आनयन्ति। ते एव सेतुं निर्मान्ति। प्रजाः धनं ददति। तथापि सेतोः उद्घाटनार्थं मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?"

पिता अवदत्–"प्रथममेव अहम् अकथयम् यत् सः देशस्य मन्त्री अस्ति। स जनप्रतिनिधिः अपि अस्ति। जनतायाः धनेन निर्मितस्य सेतोः उद्घाटनाय जनप्रतिनिधिः आमन्त्रित भवति। चल सुसज्जिता भूत्वा विद्यालयं चल।" अनारिकायाः मनसि इतोऽपि बहवः प्रश्नाः सन्ति।

शब्दार्थाः

महती	–	बड़ी	great
जिज्ञासा	–	जानने की इच्छा	curiosity
अन्वभवत्	–	अनुभव किया	felt
मनोविनोदाय	–	मन प्रसन्न करने के लिए	for recreation
चिन्तयति	–	सोचती है	thinks
अस्मरत्	–	याद किया	remembered
सेतुः	–	पुल	bridge
उदतरत्(उत्+अतरत्)	–	उत्तर दिया	answered
प्रस्तराणि	–	पत्थर	stones
सर्वकाराय	–	सरकार के लिए	for the government
उद्घाटनार्थम्	–	उद्घाटन के लिए	for the inauguration
निर्मान्ति	–	निर्माण करते हैं/बनाते हैं	construct
ददति	–	देते हैं	give





1. **उच्चारणं कुरुत-**

मन्त्री	निर्माणम्	भ्रात्रा
कर्मकराः	जिज्ञासा	पित्रे
भ्रातृणाम्	उद्घाटनार्थम्	पितृभ्याम्
नेतरि	अपृच्छत्	चिन्तयति

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि लिखत-**

(क) कस्याः महती जिज्ञासा वर्तते?

(ख) मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?

(ग) सेतोः निर्माणं के अकुर्वन्?

(घ) सेतोः निर्माणाय कर्मकराः प्रस्तराणि कुतः आनयन्ति?

(ङ) के सर्वकाराय धनं प्रयच्छन्ति?

3. **रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) <u>अनारिकायाः</u> प्रश्नैः सर्वेषां बुद्धिः चक्रवत् भ्रमति।

(ख) मन्त्री सेतोः <u>उद्घाटनार्थम्</u> आगच्छति।

(ग) <u>कर्मकराः</u> सेतोः निर्माणम् कुर्वन्ति।

(घ) <u>पर्वतेभ्यः</u> प्रस्तराणि आनीय सेतोः निर्माणं भवति।

(ङ) जनाः <u>सर्वकाराय</u> देशस्य विकासार्थं धनं ददति।

4. **उदाहरणानुसारं रूपाणि लिखत-**

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः (पितृ)
	....	भ्रातरौ	.... (भ्रातृ)



द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन् (दातृ)
	....	धातारौ	.... (धातृ)
तृतीया	धात्रा	....	धातृभिः (धातृ)
	....	कर्तृभ्याम्	.... (कर्तृ)
चतुर्थी	नेत्रे	नेतृभ्याम्	नेतृभ्यः (नेतृ)
	विधात्रे	....	.... (विधातृ)
पञ्चमी	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः (कर्तृ)
	....	....	हर्तृभ्यः (हर्तृ)
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम् (पितृ)
	....	भ्रात्रोः	.... (भ्रातृ)
सप्तमी	सवितरि	सवित्रोः	सवितृषु (सवितृ)
	अभिनेतरि	....	.... (अभिनेतृ)
सम्बोधनम्	हे जामातः!	हे जामातरौ!	हे जामातरः (जामातृ)
	हे नप्तः!	....	.... (नप्तृ)

5. कोष्ठकेभ्यः समुचितपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) अहं प्रातः .... सह भ्रमणाय गच्छामि। (पित्रा/पितुः)

(ख) बाला आपणात् .... फलानि आनयति। (भ्रातुः/भ्रात्रे)

(ग) कर्मकराः सेतोः निर्माणस्य .... भवन्ति। (कर्तारम्/कर्त्तारः)

(घ) मम .... तु एतेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि अददात्। (पिता/पितरः)

(ङ) तव .... कुत्र जीविकोपार्जनं कुरुतः? (भ्रातरः/भ्रातरौ)

6. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



धारयन्ति	बालाः	वसयानम्	छत्रम्	ते	आरोहन्ति	वर्षायाम्

....

....

....

....

7. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

प्रश्नाः = ...

नवीनः = ...

प्रातः = ...

आगच्छति = ...

प्रसन्नः = ...





पञ्चदशः पाठः

लालनगीतम्



उदिते सूर्ये धरणी विहसति ।
पक्षी कूजति कमलं विकसति ॥1॥

नदति मन्दिरे उच्चैर्ढक्का ।
सरितः सलिले सेलति नौका ॥2॥

पुष्पे पुष्पे नानारङ्गाः ।
तेषु डयन्ते चित्रपतङ्गाः ॥3॥

वृक्षे वृक्षे नूतनपत्रम् ।
विविधैर्वर्णैर्विभाति चित्रम् ॥4॥

धेनुः प्रातर्यच्छति दुग्धम् ।
शुद्धं स्वच्छं मधुरं स्निग्धम् ॥5॥

गहने विपिने व्याघ्रो गर्जति ।
उच्चैस्तत्र च सिंहः नर्दति ॥6॥

हरिणोऽयं खादति नवघासम् ।
सर्वत्र च पश्यति सविलासम् ॥7॥

उष्ट्रः तुङ्गः मन्दं गच्छति ।
पृष्ठे प्रचुरं भारं निवहति ॥8॥

घोटकराजः क्षिप्रं धावति ।
धावनसमये किमपि न खादति ॥9॥

पश्यत भल्लुकमिमं करालम् ।
नृत्यति थथथै कुरु करतालम् ॥10॥

–सम्पदानन्दमिश्रः

शब्दार्थाः

उदिते	–	उगने पर, निकलने पर	on the rise
नदति	–	आवाज/ध्वनि करता है	rings
उच्चैः	–	ऊँची आवाज में, जोर से	loudly
ढक्का	–	नगाड़ा	drum
सेलति	–	डगमगाती है, हिलती डुलती है	shakes
डयन्ते	–	उड़ते हैं	fly
चित्रपतङ्गाः	–	तितलियाँ	butterflies
वर्णैः	–	रंगो से	with colours
विभाति	–	सुशोभित होता है	shines
स्निग्धम्	–	मुलायम, चिकना	soft
गहने	–	घने	dense
विपिने	–	जंगल में	in forest
नर्दति	–	दहाड़ता है	roars
तुङ्गः	–	ऊँचा	lofty, high
निवहति	–	ढोता है	carries
क्षिप्रम्	–	जल्दी से, तेजी से	swiftly
भल्लुकः	–	भालू	bear
करालम्	–	भयानक	ferocious
करतालम्	–	ताली	clapping



1. गीतम् सस्वरं गायत।

2. एकपदेन उत्तरत-

(क) का विहसति?

(ख) किम् विकसति?

(ग) व्याघ्रः कुत्र गर्जति?

(घ) हरिणः किं खादति?

(ङ) मन्दं कः गच्छति?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) सलिले नौका सेलति।

(ख) पुष्पेषु चित्रपतङ्गाः डयन्ते।

(ग) उष्ट्रः पृष्ठे भारं वहति।

(घ) धावनसमये अश्वः किमपि न खादति।

(ङ) सूर्ये उदिते धरणी विहसति।

4. मञ्जूषातः समानार्थकपदानि चित्वा लिखत-

पृथिवी	देवालये	जले	वने	मृगः	भयङ्करम्

धरणी	....	विपिने	....
करालम्	....	हरिणः	....
सलिले	....	मन्दिरे	....

5. विलोमपदानि मेलयत-

मन्दम्	नूतनम्
नीचैः	स्निग्धम्
कठोरः	पर्याप्तम्
पुरातनम्	उच्चैः
अपर्याप्तम्	क्षिप्रम्

6. उचितकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुचितकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

(क) धावनसमये अश्वः खादति। ☐

(ख) उष्ट्रः पृष्ठे भारं न वहति। ☐

(ग) सिंहः नीचैः क्रोशति। ☐

(घ) पुष्पेषु चित्रपतङ्गाः डयन्ते। ☐

(ङ) वने व्याघ्रः गर्जति। ☐

(च) हरिणः नवघासम् न खादति। ☐

7. अधोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत-

यथा- चित्रपतङ्गः	(प्रथमा-बहुवचने)	-	चित्रपतङ्गाः
भल्लुकः	(तृतीया-एकवचने)	-	....
उष्ट्रः	(पञ्चमी-द्विवचने)	-	....
हरिणः	(सप्तमी-बहुवचने)	-	....
व्याघ्रः	(द्वितीया-एकवचने)	-	....
घोटकराजः	(सम्बोधन-एकवचने)	-	....



8. **चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-**



खगाः	विकसन्ति	कमलानि	उदेति	क्रीडन्ति
डयन्ते	सूर्यः	चित्रपतङ्गाः	कूजन्ति	बालाः

....

....

....

....

....

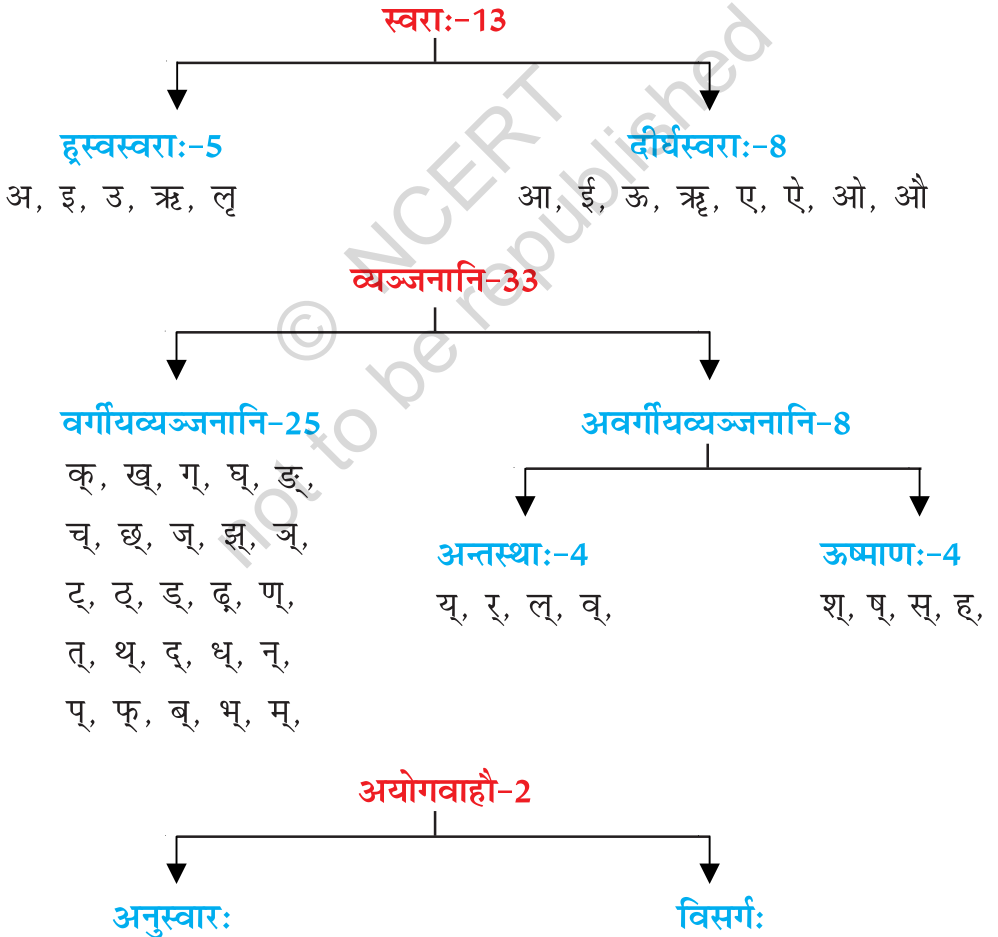


परिशिष्टम्

वर्णविचारः

1. वर्णाः

संस्कृते इदानीं 48 वर्णानां प्रयोगः भवति। ते मुख्यतया भागत्रयेण विभक्ताः सन्ति, 1-स्वराः 2-व्यञ्जनानि 3-अयोगवाहाश्चेति, यथा-



2. उच्चारणस्थानानि

वर्णाभिव्यक्तिप्रदेशः स्थानं कथ्यते। शब्दप्रयोगसमये कायाग्निना प्रेरितः वायुः कण्ठादिस्थानेषु सञ्चरन् वर्णान् अभिव्यनक्ति। यथोक्तं पाणिनीयशिक्षायाम्–

आत्मा बुद्ध्या समेत्यर्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥
मारुतस्तूरसि चरन् मन्द्रं जनयति स्वरम् ॥
अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकौष्ठौ च तालु च ॥

एवम् वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि अष्टौ सन्ति। (*i*) उरः (*ii*) कण्ठः (*iii*) शिरः (*iv*) जिह्वामूलम् (*v*) दन्ताः (*vi*) नासिका (*vii*) ओष्ठौ (*viii*) तालुः। तद्यथा–

वर्णाः	उत्पत्तिस्थानानि	वर्णानां संज्ञा
अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्, विसर्गः	कण्ठः	कण्ठ्यः
इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	तालुः	तालव्यः
ऋ, ॠ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	मूर्धा	मूर्धन्यः
लृ, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	दन्ताः	दन्त्यः
उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्	ओष्ठौ	ओष्ठ्यः
ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	नासिका + कण्ठादीनि	नासिक्यः
ए, ऐ	कण्ठतालू	कण्ठतालव्यः
ओ, औ	कण्ठोष्ठम्	कण्ठोष्ठ्यः
व	दन्तोष्ठम्	दन्त्योष्ठ्यः
अनुस्वारः	नासिका	नासिक्यः

कारकम्

(सामान्यपरिचयः)

सामान्यतः षट्कारकाणि भवन्ति। यथा–

कर्त्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणम् इत्याहुः कारकाणि षट्॥

(*i*) कर्त्तृकारकम् (*ii*) कर्मकारकम् (*iii*) करणकारकम्
(*iv*) सम्प्रदानकारकम् (*v*) अपादानकारकम् (*vi*) अधिकरणकारकम्

कर्त्तृकारकम् – स्वतन्त्रः कर्त्ता। क्रियायां यः स्वतन्त्रः प्रधानो वा भवति सः कर्त्ता। यथा–रामः ग्रामं गच्छति। अत्र गमनक्रियायां रामः स्वतन्त्रः वर्तते, अतः सः कर्त्तृकारकम् अस्ति। वाक्ये मुख्ये कर्तरि प्रथमा, गौणे कर्तरि च तृतीया विभक्तिः भवति। यथा–

(क) रामः ग्रामं गच्छति।
(ख) रामेण ग्रामः गम्यते।

कर्मकारकम् – कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्त्ता स्वक्रियया यम् अर्थम् अतिशयेन प्राप्तुम् इच्छति तत् कर्म भवति। यथा–बालकः विद्यालयं गच्छति। अत्र वाक्ये बालकः कर्त्ता भवति, गमनक्रियया विद्यालयः तस्य ईप्सिततमं वर्तते, अतः विद्यालय इति कर्मकारकं वर्तते, कर्मणि द्वितीया विभक्तिः, (कर्मवाच्ये) मुख्ये च प्रथमा विभक्तिः भवति, यथा–

(क) बालकः विद्यालयं गच्छति।
(ख) बालकेन विद्यालयः गम्यते।

करणकारकम् – साधकतमं करणम्। क्रियासिद्धौ यत् अतिशयेन सहायकं भवति, तत् करणं भवति, यथा–श्यामः कलमेन लिखति। अत्र कर्त्तुः श्यामस्य लेखनक्रियायां कलमः अतिशयेन सहायकः, अतः कलम इति करणकारकं भवति। करणे तृतीया-विभक्तिः भवति।

सम्प्रदानकारकम् – कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। कर्त्ता दानक्रियया यं सम्बद्धुम् इच्छति, तत् सम्प्रदानं भवति। यथा–देवदत्तः भिक्षुकाय भिक्षां ददाति। अत्र कर्त्ता देवदत्तः



दानक्रियया भिक्षुकम् अभिप्रैति = सम्बद्धुम् इच्छति। अतः भिक्षुकपदं सम्प्रदानकारकम्। सम्प्रदाने चतुर्थी-विभक्तिः भवति।

अपादानकारकम् - ध्रुवमपायेऽपादानम्। अपाये = विभागे, यत् ध्रुवम् = अवधिभूतम् तत् अपादानं भवति, यथा- वृक्षात् फलं पतति। अत्र फलस्य विभागः वृक्षात् भवति, अतः वृक्षः ध्रुवः इति अपादानकारकम्। अपादाने पञ्चमी-विभक्तिः भवति।

अधिकरणकारकम् - आधारोऽधिकरणम्। कर्तृकर्मनिष्ठक्रियायाः आधारभूतं यत् वर्तते, तत् अधिकरणं भवति, यथा- विद्यालये छात्राः पठन्ति। अत्र कर्त्तुः पठनक्रियायाः आधारः विद्यालयः अधिकरणकारकम्। अधिकरणे सप्तमी-विभक्तिः भवति।

उपपदविभक्तिः

पदम् आश्रित्य या विभक्तिः सा उपपदविभक्तिः। यथा-

उभयतः	=	दोनों तरफ (द्वितीया) **नदीम्** उभयतः वृक्षाः सन्ति।
परितः	=	चारों तरफ (द्वितीया) **विद्यालयं** परितः प्राचीरम् अस्ति।
सर्वतः	=	सभी तरफ (द्वितीया) **ग्रामं** सर्वतः कृषिक्षेत्राणि सन्ति।
प्रति	=	की ओर (द्वितीया) छात्रः **विद्यालयं** प्रति गच्छति।
निकषा	=	समीप में (द्वितीया) **विद्यालयं** निकषा उद्यानम् अस्ति।
धिक्	=	निन्दा (द्वितीया) **मूर्खं** धिक्।
सह	=	सहित (तृतीया) बालिका **बालकेन** सह खेलति।
विना	=	अतिरिक्त (तृतीया/पञ्चमी/द्वितीया) **ज्ञानेन** विना जीवनं वृथा।
अलम्	=	वारण (तृतीया) **विवादेन** अलम्।
		समर्थ (चतुर्थी) मल्लः **मल्लाय** अलम्।
नमः	=	नमस्कार (चतुर्थी) **पितृदेवाय** नमः।
बहिः	=	बाहर (पञ्चमी) **विद्यालयात्** बहिः बालकाः खेलन्ति।
उपरि:	=	ऊपर (षष्ठी) **वृक्षस्य** उपरि मर्कटाः क्रीडन्ति।
अधः	=	नीचे (षष्ठी) **वृक्षस्य** अधः पथिकः उपविशति।
अन्तः	=	भीतर (षष्ठी) **विद्यालयस्य** अन्तः छात्राः पठन्ति।

शब्दरूपाणि

सर्वनाम-शब्दः

एतत् (पुँल्लिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतत् (स्त्रीलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतत् (नपुंसकलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि



तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

विशेषः- सर्वनामशब्दानां सम्बोधने रूपाणि न भवन्ति।

तत् (पुँल्लिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् (स्त्रीलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् (नपुंसकलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

किम् (पुँल्लिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (स्त्रीलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः



चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् (नपुंसकलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

इकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दः

मति

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः/मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः/मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्/मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधनम्	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

एवमेव गति-स्थिति-शक्ति-प्रीति-कृति-इत्यादीनाम् इकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

ईकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दः

नदी

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधनम्	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

एवमेव भगिनी-लेखनी-मानिनी-पठन्ती-इत्यादीनाम् ईकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

इकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दः

वारि

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधनम्	हे वारि! हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!



ऋकारान्त-पुँलिङ्ग-शब्दः

पितृ

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधनम्	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

एवमेव भ्रातृ-जामातृ-देवृ (देवर)-इत्यादीनाम् ऋकारान्त-पुँलिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति। तृन्-तृच्-प्रत्ययान्तानां दातृ-वक्तृ-धातृ-नेतृ-इत्यादीनां तथा स्वसृ-नप्तृ-क्षत्रृ-होतृ-पोतृ-शब्दानां प्रथमा-द्वितीया-विभक्त्योः रूपेषु दीर्घः भवति। यथा-दाता, दातारौ दातारः। मातृशब्दस्य द्वितीया बहुवचने मातॄः भवति, अन्यानि रूपाणि समानानि एव।

उकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दः

मधु

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधनम्	हे मधु, हे मधो!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

एवमेव जानु-तालु-वस्तु-इत्यादीनाम् उकारान्त-नपुंसकशब्दानां रूपाणि भवन्ति।

धातु-रूपाणि

चर् (चलना, चरना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चरति	चरतः	चरन्ति
मध्यमपुरुषः	चरसि	चरथः	चरथ
उत्तमपुरुषः	चरामि	चरावः	चरामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चरिष्यति	चरिष्यतः	चरिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	चरिष्यसि	चरिष्यथः	चरिष्यथ
उत्तमपुरुषः	चरिष्यामि	चरिष्यावः	चरिष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अचरत्	अचरताम्	अचरन्
मध्यमपुरुषः	अचरः	अचरतम्	अचरत
उत्तमपुरुषः	अचरम्	अचराव	अचराम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चरतु	चरताम्	चरन्तु
मध्यमपुरुषः	चर	चरतम्	चरत
उत्तमपुरुषः	चराणि	चराव	चराम



विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चरेत्	चरेताम्	चरेयुः
मध्यमपुरुषः	चरेः	चरेतम्	चरेत
उत्तमपुरुषः	चरेयम्	चरेव	चरेम

एवमेव हस्, चल्, खेल्, खाद्, धाव्, रक्ष्, पूज्, कूर्द्, पत्, भ्रम्, लिख्, गम् (गच्छ), पठ्, क्रीड्-इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

कृ (करना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यमपुरुषः	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तमपुरुषः	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तमपुरुषः	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यमपुरुषः	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तमपुरुषः	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यमपुरुषः	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तमपुरुषः	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यमपुरुषः	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तमपुरुषः	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

वस् (रहना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वसति	वसतः	वसन्ति
मध्यमपुरुषः	वससि	वसथः	वसथ
उत्तमपुरुषः	वसामि	वसावः	वसामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति
मध्यमपुरुषः	वत्स्यसि	वत्स्यथः	वत्स्यथ
उत्तमपुरुषः	वत्स्यामि	वत्स्यावः	वत्स्यामः



लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
मध्यमपुरुषः	अवसः	अवसतम्	अवसत
उत्तमपुरुषः	अवसम्	अवसाव	अवसाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वसतु	वसताम्	वसन्तु
मध्यमपुरुषः	वस	वसतम्	वसत
उत्तमपुरुषः	वसानि	वसाव	वसाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वसेत्	वसेताम्	वसेयुः
मध्यमपुरुषः	वसेः	वसेतम्	वसेत
उत्तमपुरुषः	वसेयम्	वसेव	वसेम

दृश् (पश्य) देखना

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यमपुरुषः	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तमपुरुषः	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुषः	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यमपुरुषः	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तमपुरुषः	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यमपुरुषः	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तमपुरुषः	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यमपुरुषः	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तमपुरुषः	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

स्था (तिष्ठ) ठहरना

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यमपुरुषः	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तमपुरुषः	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः



लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तमपुरुषः	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यमपुरुषः	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तमपुरुषः	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यमपुरुषः	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तमपुरुषः	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यमपुरुषः	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तमपुरुषः	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

पच् (पकाना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यमपुरुषः	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तमपुरुषः	पचामि	पचावः	पचामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तमपुरुषः	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यमपुरुषः	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तमपुरुषः	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यमपुरुषः	पच	पचतम्	पचत
उत्तमपुरुषः	पचानि	पचाव	पचाम



विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यमपुरुषः	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तमपुरुषः	पचेयम्	पचेव	पचेम

पा (पिब्) पीना

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यमपुरुषः	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तमपुरुषः	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तमपुरुषः	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यमपुरुषः	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तमपुरुषः	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यमपुरुषः	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तमपुरुषः	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यमपुरुषः	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तमपुरुषः	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

संख्यावाचकशब्दाः

१	एकः	११	एकादश
२	द्वौ	१२	द्वादश
३	त्रयः	१३	त्रयोदश
४	चत्वारः	१४	चतुर्दश
५	पञ्च	१५	पञ्चदश
६	षट्	१६	षोडश
७	सप्त	१७	सप्तदश
८	अष्ट/अष्टौ	१८	अष्टादश
९	नव	१९	नवदश/एकोनविंशतिः/ऊनविंशतिः
१०	दश	२०	विंशतिः



२१ एकविंशतिः
२२ द्वाविंशतिः
२३ त्रयोविंशतिः
२४ चतुर्विंशतिः
२५ पञ्चविंशतिः
२६ षड्विंशतिः
२७ सप्तविंशतिः
२८ अष्टाविंशतिः
२९ नवविंशतिः/एकोनत्रिंशत्
३० त्रिंशत्
३१ एकत्रिंशत्
३२ द्वात्रिंशत्
३३ त्रयस्त्रिंशत्
३४ चतुस्त्रिंशत्
३५ पञ्चत्रिंशत्
३६ षट्त्रिंशत्
३७ सप्तत्रिंशत्
३८ अष्टात्रिंशत्
३९ नवत्रिंशत्/एकोनचत्वारिंशत्
४० चत्वारिंशत्

४१ एकचत्वारिंशत्
४२ द्विचत्वारिंशत्
४३ त्रयश्चत्वारिंशत्/त्रिचत्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ षट्चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टचत्वारिंशत्/अष्टाचत्वारिंशत्
४९ नवचत्वारिंशत्/एकोनपञ्चाशत्
५० पञ्चाशत्
५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्वापञ्चाशत्/द्विपञ्चाशत्
५३ त्रय:पञ्चाशत्/त्रिपञ्चाशत्
५४ चतु:पञ्चाशत्
५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ षट्पञ्चाशत्
५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टापञ्चाशत्/अष्टपञ्चाशत्
५९ नवपञ्चाशत्/एकोनषष्टिः
६० षष्टिः



६१	एकषष्टि:
६२	द्वाषष्टि:/द्विषष्टि:
६३	त्रयष्षष्टि:/त्रिषष्टि:
६४	चतुष्षष्टि:
६५	पञ्चषष्टि:
६६	षट्षष्टि:
६७	सप्तषष्टि:
६८	अष्टाषष्टि:/अष्टषष्टि:
६९	नवषष्टि:/एकोनसप्तति:
७०	सप्तति:
७१	एकसप्तति:
७२	द्वासप्तति:/द्विसप्तति:
७३	त्रिसप्तति:/त्रयस्सप्तति:
७४	चतुस्सप्तति:
७५	पञ्चसप्तति:
७६	षट्सप्तति:
७७	सप्तसप्तति:
७८	अष्टासप्तति:/अष्टसप्तति:
७९	नवसप्तति:/एकोनाशीति:
८०	अशीति:

८१	एकाशीति:
८२	द्व्यशीति:
८३	त्र्यशीति:
८४	चतुरशीति:
८५	पञ्चाशीति:
८६	षडशीति:
८७	सप्ताशीति:
८८	अष्टाशीति:
८९	नवाशीति:/एकोननवति:
९०	नवति:
९१	एकनवति:
९२	द्वानवति:/द्विनवति:
९३	त्रयोनवति:/त्रिनवति:
९४	चतुर्नवति:
९५	पञ्चनवति:
९६	षण्णवति:
९७	सप्तनवति:
९८	अष्टानवति:/अष्टनवति:
९९	नवनवति:/एकोनशतम्
१००	शतम्



पूरणवाचकशब्दाः

	पुँलिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुँसकलिङ्गे
१	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
२	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
३	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
४	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
५	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
६	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
७	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
८	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
९	नवमः	नवमी	नवमम्
१०	दशमः	दशमी	दशमम्